पहचान

राजभाषा पत्रिका

2024-25

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

बॉम्बे एक्जीबिशन सेंटर, गोरेगांव ईस्ट, मुंबई में इंडिया केम 2024 में एचओसीएल के स्टॉल का उद्घाटन करती हुई सुश्री अनुप्रिया पटेल, केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री और सीएंडएफ राज्य मंत्री, भारत सरकार और सीएमडी सहित बोर्ड के पदाधिकारी

स्वतंत्रता दिवस में ध्वजारोहण करते हुए कंपनी के सीएमडी श्री सजीव बी.

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के सिलसिले में कर्मचारियों और छात्रों के लिए जागरूकता सत्र

राष्ट्रीय एकता दिवस प्रतिज्ञा लेते हुए कंपनी के वरिष्ठ अधिकारीगण

पहचान

राजभाषा पत्रिका

2024-25

संरक्षक

पी. रविकुमार
कार्यपालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी

मुख्य संपादक

एम.जे. जगदीश
मुख्य महा प्रबंधक (इंजीनियरिंग/उत्पादन/मानव संसाधन) एवं फैक्टरी प्रबन्धक
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक

रमेश ओ.
मुख्य प्रबन्धक (मानव संसाधन/राजभाषा)

सम्पादन सहयोगी

अरुण एम.वी.
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी

संपर्क

मुख्य संपादक,
एचओसीएल
अंबलमुगल
एरणाकुलम,
कोची -682302
दूरभाष 04842727201/298

- केवल आंतरिक परिचालन के लिए।
- पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से एचओसीएल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

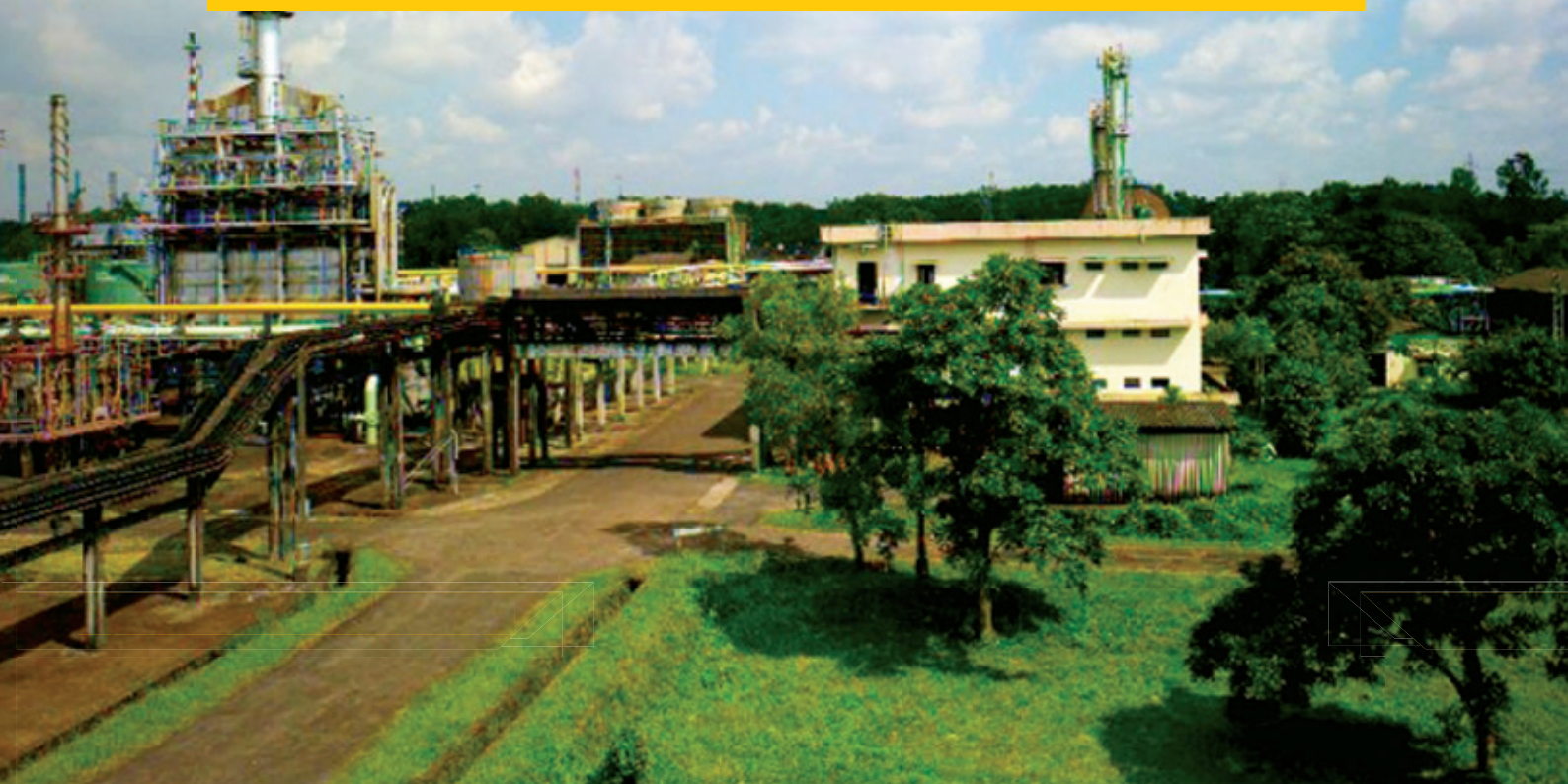

सूची

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश 5

निदेशक (वित्त) का संदेश 6

कार्यापालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी का अपील 7

मुख्य संपादक की कलम से 8

नई दिल्ली में हिंदी दिवस और चतुर्थ अखिल भारतीय राजाभाषा सम्मेलन 9

हिंदी पखवाड़ा समारोह - 2024 11

हॉक्स फुट रनिंग क्लब 12

एचओसीएल में हर घर तिरंगा समारोह 14

एचओसीएल में राष्ट्रीय खेल दिवस समारोह 15

विश्व पर्यावरण दिवस समारोह 2024 16

राजभाषा चेतना कार्यक्रम 17

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024 23

कम्प्रेस्ड एयर फोम सिस्टम 25

विस्तारित निर्माता उत्तरदायित्व 27

कंपनी के मुनाफे को बढ़ाने में इन्वेंट्री प्रबंधन और सामग्री विभाग की भूमिका 30

मातृभाषा - कल आज और कल 32

समृद्धि - कोच्चि का अपना भोजनालय 34

नारी शक्ति - सशक्त भारत का आधार 35

कश्मीर यात्रा - बर्फ से ढका खूबसूरत गुलमर्ग 38

हिंदी भाषा - कविता 40

प्रतियोगिता के लिए तैयार चिह्न (लोगो) 41

मुख्य अंतर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय दिवसों 42

संदेश...

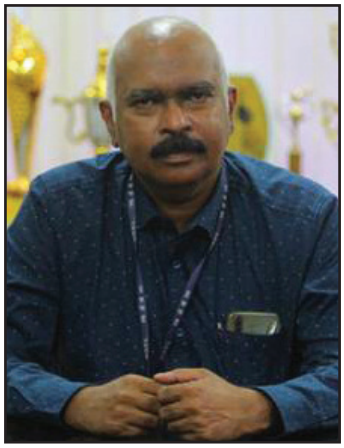

प्रिय साथियों,

'हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ'

14 सितंबर को, हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को संघ सरकार की राजभाषा के रूप में अपनाया। हिंदी केंद्र सरकार की राजभाषा है। भाषा हर एक राष्ट्र की पहचान होती है। हिंदी भारत की पहचान बन गयी है। बहुभाषी भारत में हिंदी संपर्क भाषा की अहम भूमिका निभा रही है। आज हिंदी जन-जन की भाषा है।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन 14 और 15 सितम्बर को भारत मंडपम, नई दिल्ली में किया जा रहा है। कार्यक्रम में हमारे कार्यालय की सहभागिता सुनिश्चित की गयी है। वर्ष 2024 का हिंदी पखवाड़ा समारोह हमारे कार्यालय में 14 सितम्बर से विविध प्रतियोगिताओं और गतिविधियों के साथ धूम-धाम से मनाया जा रहा है। राजभाषा के इस उत्सव में सक्रिय रूप से भाग लीजिए और राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करें।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन के लिए हमारे कार्यालय अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। राजभाषा सेमिनार, तकनीकी कार्यशाला, कंप्यूटर प्रशिक्षण जैसे अनेक कार्यक्रम लगातार आयोजित किए जा रहे हैं। एचओसीएल द्वारा केवल कार्यालय में ही नहीं, बाहरी संपर्क कार्यक्रम के रूप में केरल के विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में राजभाषा चेतना कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। ये सभी कार्यक्रम राजभाषा के प्रति हमारी निष्ठा का मिसाल है। खुशी की बात है कि राजभाषा के उत्तम कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2022-23 के लिए हमें क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार प्रदान किया गया है। सभी कार्मिकों को बधाई एवं अभिनंदन। इस जोश को बनाए रखें।

सभी से अनुरोध है कि राजभाषा हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित करें, विशेषकर दैनिक कामकाज के पत्राचार और ईमेल में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। सरल हिंदी का प्रयोग करने से इसकी स्वीकृति बढ़ेगी तथा प्रयोग भी बढ़ेगा।

आइए, हम सब मिलकर सरकार की राजभाषा नीति संबंधी अपेक्षाओं को पूरा करते हुए अपने कामकाज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करेंगे।

जय हिंद, जय हिंदी

सजीव बी.
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश...

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर कंपनी के अधिकारीगण, कर्मचारीगण और सहकर्मियों को हार्दिक शुभकामनाएं। हमारी कंपनी में राजभाषा हिंदी में काम-काज उत्साहपूर्वक किया जा रहा है। आपको विदित है कि हिंदी हमारी राजभाषा है, राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा भी है। हिंदी की अलग -अलग भूमिका होती है। हिंदी प्रान्तों में अनेक बोलियों के बीच संपर्क भाषा, भारत में अनेक भाषाओं के बीच संपर्क भाषा और अंतरराष्ट्रीय स्तर विश्वभाषाओं के बीच भारत की भाषा के रूप में अपनी भूमिका खूब निभा रही है।

तकनीकी प्रगति के दौर में हिंदी स्वयं सुसज्जित होकर तकनीकी समर्थित एवं लोकप्रिय भाषा के रूप में अपनी स्वीकार्यता बढ़ा रही है। आज उपलब्ध किसी प्रकार के तकनीकी विकास को आत्मसात करने में हिंदी आगे है। इसीलिए हिंदी का प्रयोग हर क्षेत्र में आसानी से हो रही है और विश्व भाषा के रूप में हिंदी की पहचान बढ़ रही है। इसमें भारत सरकार की भूमिका महत्वपूर्ण है। दुनिया की दिग्गज आईटी कंपनियों ने भारत की भाषाओं में सबसे पहले हिंदी को प्राथमिकता दे रही है और आसानी से प्रयोग करने में मदद कर रहे है।

मुझे इस बात की खुशी है कि हमारी कंपनी में हिंदी पखवाड़ा विविध प्रतियोगिताओं और गतिविधियों के साथ मनाया जा रहा है। अनुरोध है कि अपने दैनिक काम-काज में हिंदी का प्रयोग करें और इस अवसर पर आयोजित विविध प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर भाग लें। कंपनी की गृहपत्रिका 'पहचान' की आगामी अंक प्रकाशित हो रहा है। अपनी रचनाओं को चाहे लेख हो, यात्रा विवरण हो, अनुभव हो या कविता हो इसमें प्रकाशित करने के लिए दे दें। हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करते हुए अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वाह करें। आप सभी को शुभकामनाएं।

जय हिंद, जय हिंदी

योगेन्द्र प्रसाद शुक्ला
निदेशक (वित्त)

अपील...

प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हम हिन्दी दिवस मना रहे हैं। यह दिन हमारे लिए गर्व का प्रतीक है क्योंकि हिन्दी न केवल हमारी राजभाषा है, बल्कि हमारी संस्कृति और हमारी पहचान का अभिन्न हिस्सा भी है। यह भाषा हमारे देश की विविधता को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है और हम सभी को एक-दूसरे से जोड़ने का माध्यम है।

हमारे कार्यालय में भी हिन्दी के प्रति सम्मान और उसकी प्रगति को बढ़ावा देना हमारा कर्तव्य है। हिन्दी में काम करने से न केवल हम अपनी मातृभाषा को समृद्ध कर सकते हैं, बल्कि अपने काम को अधिक प्रभावी और सरल बना सकते हैं। भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि यह हमारी सोचने और समझने की शक्ति को भी प्रभावित करती है।

इस अवसर पर, मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि हम अपने कार्यों में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें और इसके प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दें। 14 से 29 तक आयोजित हिन्दी पखवाड़ा समारोह में उत्साहपूर्वक भाग लें और विविध प्रतियोगिताओं में शामिल हो जाए। आइए, मिलकर हिन्दी को और सशक्त बनाएं और इसका गौरव बढ़ाएं।

हिन्दी दिवस की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

पी. रविकुमार
कार्यापालक निदेशक एवं इकाई प्रभारी

मुख्य संपादक की कलम से

कंपनी की गृह पत्रिका 'पहचान' का नया अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे आपार हर्ष हो रहा है। राजभाषा के सफल कार्यान्वयन में हम प्रयासरत है। सरकार की नीति के अनुपालन हमारा कर्तव्य है। पत्रिका पहचान में कंपनी की गतिविधियों उपलब्धियों और कर्मचारियों की रचनाएँ शामिल है। राजभाषा को समर्पित इस ऑनलाइन पत्रिका का प्रकाशन हमारी निष्ठा का दृष्टांत है। कंपनी के कर्मचारियों की मेहनत और समर्पण से सभी गतिविधियां खासकर राजभाषा की आगे बढ़ रही है। इस पत्रिका के माध्यम से हम उस प्रगति को साझा करने का प्रयास कर रहे है। राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा, मातृभाषा जैसे विविध नाम से हिंदी की पहचान होती है। हमारी कंपनी में हिंदी के प्रयोग में वृद्धि देखी जा सकती है। आप इस प्रगति को आगे बढाए और हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित करें।

इस अंक में प्रकाशित लेख, रिपोर्ट और रचनाओं को पढिए और आपके सुझाव हमें सूचित करें ताकि पत्रिका के आगामी अंक को अधिक रोचक एवं आकर्षक बनाया जा सके। आपकी सहभागिता एवं सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं होता। उम्मीद है, यह अंक आपको पसंद आएगा और पत्रिका में प्रकाशित करने के लिए आपकी रचनाएं सादर आमंत्रित करते हैं।

सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए,

एम.जे. जगदीश

मुख्य महा प्रबन्धक (इंजीनियरिंग/उत्पादन/मानव संसाधन) एवं फैक्टरी प्रबंधक

नई दिल्ली में हिंदी दिवस और चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

वर्ष 2024 का हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में 14 एवं 15 सितंबर 2024 को संपन्न हुआ। राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित इस भव्य एवं गरिमामयी समारोह का उद्घाटन माननीय गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में आपने कहा कि राजभाषा हिंदी का प्रचार प्रसार केवल अन्य भारतीय भाषाओं के साथ ही होगा। इसीलिए राजभाषा विभाग के पूरक अनुभाग के रूप में भारतीय भाषा अनुभाग की स्थापना की जा रही है। इस अनुभाग के माध्यम से हिंदी और अन्य भाषाओं के बीच का संबंध ओर सुदृढ़ होगा और समन्वय कार्य सुगम होगा। राजभाषा इन सभी भाषाओं के बीच संपर्क भाषा की भूमिका निभाएगी। आपने कहा कि हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने के लिए हिंदीतर भाषा सेवियों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। इसी भूमिका को हम आगे बढ़ा रही है। राजभाषा के हीरक जयंती के पावन अवसर पर स्मारक सिक्के और स्मारक डाक टिकट का लोकार्पण आपने किया। आपके द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में पुरस्कार प्राप्त कार्यालय/मंत्रालय/बैंकों/उपक्रमों और नराकासों के लिए पुरस्कार वितरण भी किया गया। राज्य सभा के उप सभापति श्री हरिवंश सिंह, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब, गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय और श्री बंडी संजय कुमार मंच पर उपस्थित थे। भाषा विभाग के सचिव सुश्री अंशुली आर्या ने स्वागत भाषण दिया और संयुक्त सचिव डॉ मीनाक्षी जौली ने धन्यवाद अदा किया।

उदघाटन सत्र और मध्याह्न भोजन के बाद 'राजभाषा हीरक जयंती: विगत 75 वर्षों में राजभाषा, जनभाषा और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की प्रगति' विषय पर सेमिनार संपन्न हुआ। इसमें राज्यसभा के उपाध्यक्ष श्री हरिवंश सिंह, संसद सदस्य डॉ. सुधांशु त्रिवेदी और पूर्व गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा ने सार्थक एवं गंभीर विचार व्यक्त किए। सेमिनार में राजभाषा के रूप में हिंदी की प्रगति के विविध आयामों,

चरणों और विश्व भाषा के रूप में हिंदी की पहचान होने की विकास यात्रा पर विस्तार से उल्लेख हुआ।

शाम को संपन्न तीसरे सत्र में 'भारत की सांस्कृतिक विरासत और हिंदी' पर डॉ कुमार विश्वास, लोकप्रिय हिंदी कवि एवं व्याख्याता ने अपनी बातें रखी। अपने संबोधन में कविता के माध्यम से हिंदी की ऐतिहासिक परंपरा एवं वर्तमान स्वीकार्यता पर आपने उल्लेख किया।

सेमिनार के दूसरे दिन की शुरुआत 'भाषा शिक्षण में शब्दकोश की भूमिका एवं देवनागरी लिपि का वैशिष्ट्य' पर संपन्न हुआ। इस महत्वपूर्ण सत्र प्रोफेसर विमलेश कांति वर्मा - भाषाविद्, प्रोफेसर गिरीशनाथ झा - अध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, प्रोफेसर सुनील बाबू राव कुलकर्णी - निदेशक केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा, डॉ इसपाक अली - लेखक एवं शिक्षाविद् बेंगलुरु और प्रोफेसर एस तंकमणि अम्मा - भाषाविद्, केरल विश्वविद्यालय ने भाग लिया। हिंदी में शब्दकोश की भूमिका एवं देवनागरी लिपि के गुण पर अहम प्रस्तुति हुई।

दूसरा सत्र 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) के योगदान' पर रहा था। इस सत्र का उद्घाटन माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय ने किया। आपने राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में नराकास की भूमिका एवं योगदान पर अपना विचार रखा। डॉ अम्लान त्रिपाठी - प्रधान आयकर आयुक्त कोलकाता, श्री अतुल कुमार गोयल - प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, पंजाब नेशनल बैंक, श्री अजय कुमार श्रीवास्तव - प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, इंडियन ओवरसीज बैंक ने भाषण दिया।

मध्याह्न भोजन के उपरांत माननीय केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल की अध्यक्षता में 'भारतीय न्याय संहिता 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 एवं भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 पर परिचर्चा संपन्न हुई। अपने भाषण में माननीय मंत्री ने इस प्रकार के नियम बनाने की आवश्यकता एवं गुलामी की मानसिकता से मुक्ति और भारतीय संदर्भ में न्याय की नई परिकल्पना पर विशेष बल दिया। प्रोफेसर संगीत रागी लेखक एवं कवि ने विधि को भारतीय संदर्भ में लाने की मांग पर ज़ोर दिया और उपनिवेशवाद से मुक्ति संबंधी अपना विचार प्रकट किया।

चौथे सत्र में 'हिंदी भाषा के विकास का सशक्त माध्यमः भारतीय सिनेमा' पर मशहूर अभिनेता श्री अनुपम खेर ने अपनी बातें प्रकट की। प्रसिद्ध फिल्म निर्माता एवं निर्देशक श्री चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने अभिनेता से प्रश्न और सवाल तरीके में इस सत्र को आगे बढ़ाया। श्री अनुपम खेर ने अपने फ़िल्मी कैरियर में हिंदी की भूमिका एवं अंग्रेजी के वर्चस्व पर तीखी टिप्पणी दी।

प्रतिभागियों की बडी तादाद में उपस्थिति इसके पहले किसी भी सेमिनार में नहीं थी। ही नहीं, दोनों दिन के प्रतिभागियों ने पूरे सत्र में भाग लिया। इस अवसर पर विविध कार्यालयों/ संगठन/ बैंकों/ उपक्रमों की प्रदर्शन भी लगी थी। पुस्तकों का लोकार्पण और अन्य कार्य भी साथ ही सम्पन्न थे। राजभाषा के प्रचार प्रसार को बढ़ावा देने और हिंदी के महत्व को उजागार करने में सेमिनार सफल सिद्ध हुआ।

हिंदी पखवाड़ा समारोह - 2024

अरुण एम वी
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा संघ सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करने एवं उत्कृष्ट कार्यान्वयन किए गए सरकारी संगठनों को पुरस्कार प्रदान करने के लिए 14-15 सितम्बर 2023 को नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में हिन्दी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया है। माननीय गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने उद्घाटन किया। इस सम्मेलन में राज्यसभा के उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष, सांसदों, राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों और देश भर के विविध संस्थानों के निदेशकों और स्वायत्त निकायों के अध्यक्ष एवं सी ई ओ, उपक्रमों के सीएमडी सहित भाषा से जुड़े पूरे भारत के कर्मियों ने बड़ी तादाद में भाग लिया। इस कार्यक्रम में हमारे कार्यालय से अधिकारियों ने भाग लिया।

इसी कड़ी में सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए एक उत्साहवर्धक वातावरण सृजित करने हेतु तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति लगन एवं जागरूकता उत्पन्न करने के लिए एचओसीएल में 14 से 29 सितंबर 2024 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया है। समारोह के दौरान कर्मचारियों, निकटस्थ सरकारी स्कूल के छात्रों और इकाई के कर्मचारियों के बच्चों के लिए विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए कार्यशालाएं चलायी गयी और उनको कंप्यूटर प्रशिक्षण भी दिए गए। कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं में सुलेख, प्रश्नोत्तरी, हिंदी टंकण, श्रुत लेख, सुगम संगीत, रचना कार्य-यात्रावृत्त, शब्दावली, टिप्पणी और अनुवाद आदि शामिल थे। सरकारी बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, त्रिपुनिथुरा के छात्राओं के लिए वाचन और लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कर्मचारियों के बच्चों के लिए वाचन प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी। सभी ने हिंदी प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्व से भाग लिया। 04 नवम्बर 2024 को आयोजित समापन समारोह में श्री एम जे जगदीश - मुख्य महा प्रबन्धक (इंजीनियरिंग/उत्पादन/मानव संसाधन) एवं फैक्टरी प्रबन्धक, श्रीमती सिन्धू डी - मुख्य महा प्रबंधक (फायर एंड सेफ़्टी/क्यूसी/टीएसएस), श्री अभिलाष आर - मुख्य प्रबन्धक (मानव संसाधन) आदि ने पुरस्कारों का वितरण किया।

हॉक्स फुट रनिंग क्लब

एचओसीएल के इतिहास में दिनांक 19.03.2024 एक उल्लेखनीय दिन रहा। इसी दिन एचओसीएल में हॉक्स फुट रनिंग क्लब का औपचारिक उद्घाटन श्री एल षानिल लाल (ईडी और यूआईसी) की उपस्थिति में एचओसीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री बी सजीव द्वारा किया गया था। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले ऑक्टोजेरियन एथलीट श्री एम जे जैकब इस अवसर पर मुख्य अतिथि रहे थे।

विनोदकुमार के.वी.
वरिष्ठ अधिकारी एवं कल्याण अधिकारी (एच आर)

रनिंग क्लब का उद्देश्य एचओसीएल बिरादरी को शारीरिक व्यायाम करने के लिए प्रोत्साहित करना है। लोगों की गतिरहित (सेडेंटरी) जीवनशैली विभिन्न जीवनशैली से जुडी बीमारियों के प्रमुख कारणों में से एक है। तकनीकी नवाचारों में उछाल और इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के बड़े पैमाने पर उपयोग से लोगों की शारीरिक गतिविधियां कम हो रही हैं और इसके परिणामस्वरूप जीवन शैली से जुड़ी कई बीमारियाँ पैदा हो रही हैं।

हॉक्स फ़ुट रनिंग क्लब का उद्देश्य एचओसीएल के सभी कर्मचारियों के समग्र स्वास्थ्य में सुधार लाने के लक्ष्य से विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करना है। क्लब के तत्वावधान में शारीरिक गतिविधियाँ जैसे चलना, दौड़ना, साइकिल चलाना, तैराकी आदि का आयोजन किया जाएगा। क्लब जल्द ही आम जनता के लिए एक मैराथन आयोजित करने की भी योजना बना रहा है।

एचओसीएल टाउनशिप में मल्टी जिम स्थापित करना रनिंग क्लब कार्यकारी समिति का एक सपना है। एचओसी ऑफिसर्स क्लब और एचओसी रिक्रिएशन क्लब की कार्यकारी समिति के सदस्य क्लब की गतिविधियों के आयोजन में सक्रिय रूप से शामिल हैं। एचओसीएल प्रबंधन का संपूर्ण समर्थन, एचओसीएल बिरादरी की भलाई के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करने के लिए क्लब की प्रेरणा और धैर्य है। क्लब के सदस्यों ने सर्वसम्मति से श्री हिरन एम.एस. को महासचिव और श्री निपिलाल के.पी. को क्लब का कोषाध्यक्ष चुना। क्लब सदस्यता के लिए प्रवेश शुल्क 200/- रुपये निर्धारित है और मासिक सदस्यता 100/- रुपये होगी। मैं एचओसीएल के सभी कर्मचारियों से इस नवीन और भव्य पहल का हिस्सा बनने का आग्रह करता हूं।

एचओसीएल में हर घर तिरंगा समारोह

प्रशासनिक मंत्रालय और डीसीपीसी के निर्देशानुसार, एचओसीएल में हर घर तिरंगा अभियान उचित तरीके से मनाया गया। एचओसीएल ने कर्मचारियों और अन्य हितधारकों को वितरित करने के लिए 100 राष्ट्रीय ध्वज खरीदे हैं। पर्यावरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के तहत, हमने सूती कपड़े से बने राष्ट्रीय झंडे खरीदे हैं। राष्ट्रीय ध्वज के वितरण का औपचारिक उद्घाटन एचओसीएल के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री बी सजीव द्वारा 13 अगस्त 2024 को किया गया। ध्वज वितरण समारोह की तस्वीरें एचओसीएल द्वारा हमारे सोशल मीडिया हैंडल के माध्यम से व्यापक रूप से प्रकाशित की गईं।

सूरज आई.एस.
वरिष्ठ अधिकारी (एच आर)

जिन कर्मचारियों और अन्य हितधारकों ने ध्वज एकत्र किए थे, उन्होंने अपने घरों पर ध्वज फहराया। झंडा फहराने और लहराए गए झंडों के साथ खड़े होने की तस्वीरें एचओसीएल व्हाट्सएप ग्रुपों को भेजी गईं और उन्होंने तस्वीरों को विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर अपनी डीपी और स्टेटस के रूप में पोस्ट किया। हर घर तिरंगा अभियान के तहत एचओसीएल में की गई उपरोक्त गतिविधियां निश्चित रूप से कर्मचारियों और अन्य हितधारकों के मन में देशभक्ति की भावना पैदा करेंगी।

एचओसीएल में राष्ट्रीय खेल दिवस समारोह

निधिन वी.वी.
वरिष्ठ अधिकारी (एच आर)

एचओसीएल में कर्मचारियों और परिवार के सदस्यों की बड़ी भागीदारी के साथ राष्ट्रीय खेल दिवस 2024 की गतिविधियाँ आयोजित की गईं। मंत्रालय के निर्देशानुसार, समारोह का औपचारिक उद्घाटन 29 अगस्त 2024 को एचओसीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री बी सजीव द्वारा किया गया। 29 और 30 अगस्त 2024 को कर्मचारियों और परिवार के सदस्यों के लिए निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। शटल बैडमिंटन (डबल्स), सैक रेस, ग्लास और स्पून रेस। विजेताओं को नकद पुरस्कार, पदक और ट्रॉफी प्रदान की गईं। कार्यक्रम के दौरान टीमों को स्वतंत्रता सेनानियों के नाम दिए गए। हमने कर्मचारियों के लिए एक वॉलीबॉल टूर्नामेंट आयोजित करने की योजना बनाई थी, लेकिन 29 और 30 अगस्त को खराब मौसम के कारण ऐसा नहीं हो सका। हमने सितंबर माह में वॉलीबॉल टूर्नामेंट आयोजित करने का निर्णय लिया है और इस टूर्नामेंट के बाद सर्वोच्च स्कोर करने वाली टीम को ध्यानचंद ट्रॉफी से सम्मानित किया जाएगा। राष्ट्रीय खेल दिवस समारोह 2024 के दौरान एचओसीएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री बी सजीव द्वारा कर्मचारियों को फिट इंडिया शपथ दिलाई गई।

विश्व पर्यावरण दिवस समारोह 2024

एचओसीएल में विश्व पर्यावरण दिवस शानदार तरीके से मनाया गया। मैसर्स इंडियन ऑयल कार्पोरेशन (आईओसीएल) के सहयोग से एचओसीएल ने कर्मचारियों को 600 पौधे वितरित किए हैं। उपरोक्त के अलावा कर्मचारियों ने अपने घरों से वनस्पतियों के पौधे लाकर अपने साथियों को वितरित किए थे।

05 जून 2024 को एचओसीएल ने कर्मचारियों को पौधे वितरित करने के लिए हमारी कंपनी परिसर में एक समारोह का आयोजन किया है, जिसमें एचओसीएल और आईओसीएल के उच्च अधिकारियों ने कर्मचारियों को पौधे वितरित किए। इसके साथ ही अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक सहित एचओसीएल के उच्च अधिकारियों ने एचओसीएल परिसर के विभिन्न स्थानों पर पौधे लगाए। एचओसीएल अपने परिसर में प्रचुर मात्रा में पौधे लगाने और उनकी ठीक से देखभाल करने के लिए सचेत प्रयास कर रहा है। एचओसीएल के परिसर में हरा-भरा वातावरण एचओसीएल के सभी हितधारकों के ठोस प्रयासों का परिणाम है। समाज और पर्यावरण के प्रति प्रतिबद्धता के साथ एक पीएसयू होने के नाते, एचओसीएल हमारे माननीय प्रधान मंत्री द्वारा परिकल्पित धरती मां को संरक्षित करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। उपरोक्त विज़न को ध्यान में रखकर, एचओसीएल ने कर्मचारियों को सलाह दी है कि वे जहां तक

षीबा वी.एम.
वरिष्ठ अधिकारी (एच आर)

संभव हो दस्तावेजों की हार्ड कॉपी लेने से बचें और उन्हें सॉफ्ट मोड में रखें।

एचओसीएल ने पौधे लगाने और पौधे के साथ सेल्फी लेने जैसी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कर्मचारियों ने उन्हें दिए गए पौधे लगाए हैं। इसके अलावा विश्व पर्यावरण दिवस समारोह 2024 के अवसर पर कर्मचारियों के लिए स्लोगन प्रतियोगिता और पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई।

एचओसीएल ने अभियान **'एक पेड़ माँ के नाम'** के लिए नोडल अधिकारी के रूप में एक कर्मचारी को नामित किया है और नोडल अधिकारी के मार्गदर्शन में एचओसीएल में पौधे लगाने को बढ़ावा देने और धरती माता को संरक्षित करने के लिए विभिन्न गतिविधियां अभी भी चला रही हैं।

राजभाषा चेतना कार्यक्रम

हिन्दुस्तान ओर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड, अंबलमुगल, कोच्ची के तत्वावधान में केरल के विभिन्न विश्वविद्यालयों/ महाविद्यालयों के हिन्दी छात्रों के लिए 2024 अगस्त - सितंबर महीनों के दौरान 'राजभाषा चेतना कार्यक्रम' का आयोजन किया गया । पिछले कई सालों से हमें यह प्रतीत हो रहा है कि केरल के विश्वविद्यालयों तथा कॉलेजों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले हिन्दी छात्र, राजभाषा क्षेत्र में उपलब्ध विभिन्न रोज़गार के अवसरों की जानकारी, आज के बदलते परिवेश में प्रौद्योगिकी विषयक अद्यतन जानकारी एवं इस दिशा में आवश्यक कौशल संवर्धन के साधन आदि से वंचित हैं, जिससे वे अन्य विषयों के छात्रों की तुलना में नौकरी पाने में बहुत पीछे रह जाते हैं। हिन्दी छात्रों की इन कमियों को दूर करने एवं उनकी इस दिशा में क्षमता बढ़ाने के उद्देश्य से ही राजभाषा चेतना कार्यक्रम आयोजित करने का प्रयास किया गया है । एच ओ सी एल के नेतृत्व में राजभाषा के प्रचार - प्रसार के कार्यक्रमों के अलावा कार्यालय के बाहर एक 'आउट रीच कार्यक्रम' या 'सेमिनार' के रूप में इसका संचालन विभिन्न कैम्पसों में किया गया जिसकी संक्षिप्त रिपोर्ट निम्नप्रकार है :

गवर्नमेंट विक्टोरिया कॉलेज, पालक्काड

राजभाषा चेतना कार्यक्रम की शुरुआत कासरगोड जिले में 2024 फरवरी - मार्च महीने में हुआ था। इसके द्वितीय चरण की शुरुआत दिनांक 07.08.2024 को हुई। कालीकट विश्वविद्यालय के अधीन पालक्काड स्थित गवर्नमेंट विक्टोरिया कॉलेज के हिन्दी स्नातक छात्रों के लिए पहला कार्यक्रम रखा गया। उपर्युक्त तारीख को सुबह 10.00 बजे कार्यक्रम का उदघाटन कॉलेज के प्रिन्सिपल डॉ नजीब पी एम ने किया और राजभाषा संबंधी कार्यक्रम आयोजित करने के उद्देश्य पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने आशा प्रकट की कि कॉलेज के छात्रों के कौशल संवर्धन एवं राजभाषा संबंधी जानकारी बढ़ाने एवं उनको सक्षम बनाने के लिए चेतना कार्यक्रम सफल हो जाएगा। उदघाटन सत्र के अवसर पर श्री के के रामचंद्रन

के.के. रामचंद्रन
उप निदेशक (राजभाषा) सेवानिवृत्त
आयकर विभाग कोच्ची

ने हिन्दी विभाग द्वारा प्रकाशित मैगजीन का विमोचन भी किया गया ।

छात्रों द्वारा तैयार पत्रिका के प्रकाशन में संकाय सदस्य एवं विभागाध्यक्षा और सभा का दृश्य

हिन्दी बी ए प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के 90 छात्र - छात्राओं ने कार्यक्रम में भाग लिया ।

कार्यक्रम के पहले सत्र में श्री पी के पद्मनाभन, वरिष्ठ प्रबन्धक (से नि), भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन लि., कोयंबत्तूर ने 'जीवन में सफलता कैसे हासिल करें' विषय पर पी पी टी के माध्यम से संचालित सत्र छात्रों के लिए अत्यंत रोचक एवं लाभदायक सिद्ध हुआ । श्री पद्मनाभन ने बहुत सरल तरीके से जीवन की कठिनाइयों को पार करने एवं भाषाई निपुणता को बढ़ाने के सरल तरीके हिन्दी साहित्य एवं सामान्य विषय के उदाहरण के माध्यम से छात्रों को समझाया जो छात्रों के लिए एक नया अनुभव रहा ।

द्वितीय सत्र में श्री के के रामचंद्रन, उप निदेशक (से नि), आयकर विभाग, कोच्ची ने राजभाषा एवं हिंदी साहित्य से संबंधित प्रश्नोत्तरी के माध्यम से छात्र-छात्राओं को जानकारी प्रदान की। हिन्दी में उपलब्ध अद्यतन सॉफ्टवेयर एवं यूनिकोड के बारे में भी उन्होंने पी पी टी के सहारे जानकारी दी जो छात्रों के लिए अत्यंत लाभदायक प्रतीत हुई।

कार्यक्रम के तीसरे चरण में श्री ओ रमेश, मुख्य प्रबन्धक (रा भा), एच ओ सी एल ने हिन्दी में रोजगार के अवसरों के बारे में छात्रों को अवगत कराया। विभिन्न मंत्रालय, केंद्र सरकारी कार्यालय, स्वायत्त संगठन,सार्वजनिक उपक्रम, शिक्षा संस्थान, निजी क्षेत्र जैसे विभिन्न क्षेत्रों हिन्दी में उच्च शिक्षा प्राप्त छात्रों के लिए नौकरी के जो अवसर है, उनपर पी पी टी के माध्यम से उन्होंने छात्रों का ध्यान आकर्षित किया । कार्यक्रम के अंत में फीडबैक के दौरान छात्रों ने बताया कि अब तक नौकरी पाने के लिए उनकी तलाश केवल शिक्षा के क्षेत्र तक सीमित थी लेकिन अभी पता चला है कि हिन्दी छात्रों के लिए इतना विशाल क्षेत्र मौजूद है।

कार्यक्रम के अंत में डॉ जयश्री, सहायक आचार्य ने सभी को कृतज्ञता ज्ञापित की । सभी प्रतिभागी छात्रों को एच ओ सी एल द्वारा प्रायोजित मेमेंटों भी प्रदान किए गए ।

एन एस एस कॉलेज, ओट्टापालम, पालक्काड जिला

कालीकट विश्वविद्यालय के अधीन कार्यरत एन एस एस कॉलेज ओट्टापालम के हिन्दी विभाग में दिनांक 08. 08. 2024 को सुबह 10.00 बजे से अपराहन 04.30 बजे तक राजभाषा चेतना कार्यक्रम का आयोजन किया गया । सुबह 10.00 बजे कॉलेज के प्राचार्य डॉ सजीव के ने कार्यक्रम का औपचारिक उदघाटन किया। उन्होंने अपने उदघाटन भाषण में बताया कि समय-समय पर इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन निश्चय ही छात्रों में नई उमंग पैदा करेगी और उनके कौशल संवर्धन के लिए ऐसा कार्यक्रम ज़रूर लाभदायक सिद्ध होगा । उन्होंने छात्रों को अवगत कराया कि केंद्र सरकार के अधीन विभिन्न विभागों, कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी से संबन्धित बहुत सारे पद है जिसे मिलने के लिए निरंतर प्रयास करना अत्यंत आवश्यक है । डॉ मंजुला पी एस, सहायक आचार्य ने अपने अध्यक्षीय भाषण

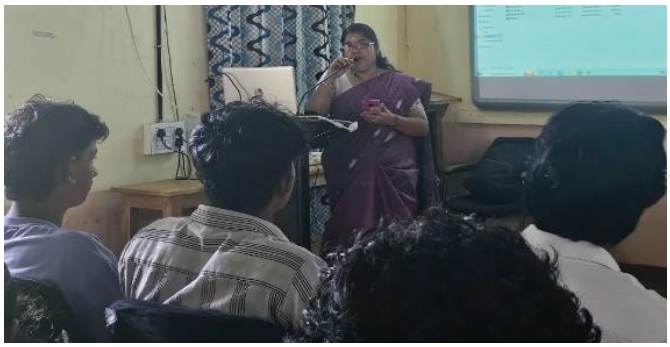

कार्यक्रम में सहायक आचार्य डॉ मंजुला पी एस एवं प्रतिभागी छात्रों की झलक

में ऐसा एक कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एच ओ सी एल को धन्यवाद दिया और कार्यक्रम में उपस्थित संकाय सदस्यों सहित सभी का हार्दिक स्वागत भी किया।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में श्री पी के पद्मनाभन ने छात्रों को खेल के माध्यम से बोलचाल की हिन्दी में बात करने का अभ्यास

सत्र चलाते हुए श्री पी के पद्मनाभन और श्री ओ रमेश

सिखाया एवं अपने जीवन को सफलता की ओर ले जाने की मुख्य बिन्दुओं पर पी पी टी के माध्यम से अवगत कराया।

श्री के के रामचंद्रन एवं श्री ओ रमेश ने द्वितीय और तृतीय सत्र में क्रमशः राजभाषा नीति, हिन्दी में विभिन्न तकनीकी सॉफ्टवेयर का परिचय तथा हिन्दी छात्रों के लिए नौकरी के विभिन्न एवन्यू के बारे में विस्तार से पी पी टी के माध्यम से समझाया। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया से ऐसा महसूस हुआ कि पूरा कार्यक्रम उनके लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध हुआ जिसके लिए उन्होंने संकाय सदस्यों को धन्यवाद दिया । कार्यक्रम में करीब 100 छात्रों ने भाग लिया और सभी को कार्यक्रम के अंत में एच ओ सी एल द्वारा प्रायोजित मेमेंटों प्रदान किए गए।

गवर्नमेंट आर्ट्स एंड साइन्स कॉलेज मींचन्दा, कोषिक्कोड

गवर्नमेंट आर्ट्स एंड साइन्स कॉलेज, मींचन्दा, कोषिक्कोड में दिनांक 02.09.2024 को सुबह 10.00 बजे से सायं 04.00 बजे तक राजभाषा चेतना कार्यक्रम का आयोजन किया गया । हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ भार्गवन के ने कार्यक्रम का उदघाटन किया और संकाय सदयों एवं सभी उपस्थितों का स्वागत एवं अभिनंदन किया।

भले ही हिन्दी एम ए एवं रिसर्च स्कॉलर सहित बहुत कम छात्र ही इस सेंटर में अध्ययन कर रहे हैं, लेकिन विषय के प्रति उनकी रुचि एवं अपनी कुशलता बढ़ाने के अपने संकल्प से यह महसूस हुआ कि वे निश्चय ही अन्य कॉलेज के छात्रों से बहुत आगे हैं । श्री पी के पद्मनाभन एवं श्री ओ रमेश ने अपनी-अपनी अध्यापन शैली में छात्रों का ध्यान विषय की ओर आकर्षित किया । जीवन को सार्थक एवं सफल कैसे बना दें, भाषाई निपुणता कैसे बढ़ाएं, राजभाषा नीति संबंधी जानकारी, हिन्दी के नए सॉफ्टवेयर की जानकारी, हिन्दी छात्रों के लिए नौकरी के अवसर आदि विभिन्न विषयों पर छात्रों को अवगत कराया । कार्यक्रम के अंत में छात्रों की प्रतिक्रिया से पता चला कि वे इस कार्यक्रम से बहुत प्रभावित हुए । सभी प्रतिभागियों को कार्यक्रम के अंत में एच ओ सी एल द्वारा प्रायोजित स्मृति चिह्न भेंट किया गया।

उद्घाटन सत्र में भाषण देते हुए विभागाध्यक्ष डॉ भार्गवन एवं सभा का दृश्य

सत्र चलाते हुए श्री पी के पद्मनाभन, श्री के के रामचंद्रन और श्री ओ रमेश

हिन्दी विभाग कालीकट विश्वविद्यालय

विख्यात कालीकट विश्वविद्यालय के, एम ए हिन्दी छात्रों के लिए दिनांक 03.09.2024 को राजभाषा चेतना कार्यक्रम का आयोजन किया गया जो प्रतिभागी छात्रों के लिए एक नया अनुभव रहा। कार्यक्रम का औपचारिक उदघाटन विभागाध्यक्ष डॉ के वी सुब्रमण्यन ने किया । उन्होंने अपने उदघाटन भाषण में बताया कि राजभाषा छात्रों की कुशलता एवं ज्ञान संवर्धन में चेतना कार्यक्रम जैसे कार्यक्रमों का आयोजन निश्चय ही सहायक सिद्ध होगा । हिन्दी विभाग के अन्य सहायक आचार्यों ने राजभाषा चेतना कार्यक्रम आयोजित करने के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए, ऐसे एक कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एच ओ सी को अपनी कृतज्ञता ज्ञपित की ।

विभागाध्यक्ष डॉ के वी सुब्रमण्यन उदघाटन भाषण देते हुए

श्री पी के पद्मनाभन, श्री के के रामचंद्रन एवं श्री ओ रमेश ने यथाक्रम 'जीवन में सफलता कैसे हासिल करें', राजभाषा नीति एवं हिन्दी में उपलब्ध इलक्ट्रोनिक सुविधाएं

प्रतिभागी छात्र का दृश्य

तथा हिन्दी छात्रों के लिए नौकरी की संभावनाएं आदि विषय पर विस्तार से व्याख्यान दिये। सभी छात्र - छात्राओं ने इन सत्रों का पूरा फायदा उठाया और फीडबैक के दौरान बताया कि अभी तक इस तरह का एक बेहतरीन कार्यक्रम का आयोजन नहीं किया गया जिस पर उन्होंने अपना संतोष व्यक्त किया । कार्यक्रम में करीब 120 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। सभी प्रतिभागियों को एच ओ सी एल की तरफ से स्मृतिचिह्न भेंट किए गए ।

द जमोरिन्स गुरुवायूरप्पन कॉलेज, कोषिक्कोड

द जमोरिन्स गुरुवायूरप्पन कॉलेज, कोषिक्कोड कैम्पस में दिनांक 04.09.2024 को राजभाषा चेतना कार्यक्रम का आयोजन किया गया । दिनांक 04.09.2024 को सुबह 10.00 बजे आयोजित उक्त कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ इन्दुलेखा पी ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। सहायक आचार्य डॉ रेश्मी यू एम ने स्वागत भाषण दिया और अपने भाषण में ऐसे एक ज्ञानवर्धक कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एच ओ सी एल को धन्यवाद दिया ।

कार्यक्रम में बी ए के करीब सत्तर छात्र - छात्राओं ने भाग लिया । प्रथम सत्र श्री पी के पद्मनाभन द्वारा अत्यंत प्रभावशाली ढंग से हिन्दी भाषा के माध्यम से जीवन को सार्थक बनाने की सरल तरीकों पर संक्षिप्त व्याख्यान दिया जिससे छात्र-छात्राओं को अपने जीवन लक्ष्य तय करने में एक नई दिशा प्राप्त हुई ।

प्राचार्य डॉ इन्दुलेखा पी द्वारा सम्बोधन

श्री के के रामचंद्रन ने द्वितीय सत्र में हिन्दी के व्यावहारिक पक्ष पर ज़ोर देते हुए राजभाषा के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। आज के परिवर्तनशील युग में हिन्दी के क्षेत्र में विकसित विभिन्न सॉफ्टवेयर, यूनिकोड आदि पर भी उन्होंने संक्षिप्त व्याख्यान दिया । पी पी टी के माध्यम से चलाया गए सत्र का पूरा लाभ छात्रों ने उठाया ।

कार्यक्रम के प्रतिभागी गण अध्यापक एवं संकाय सदस्यों के साथ

कार्यक्रम का तीसरे सत्र का संचालन 'राजभाषा एवं रोजगार के अवसर' विषय पर श्री ओ रमेश ने किया । उन्होंने केंद्र सरकार, राज्य सरकार, निजी क्षेत्र, विदेश आदि विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्ध विभिन्न पदों के बारे में पी पी टी के साहरे विस्तार से चर्चा की जिससे छात्रों को अपनी नौकरी तलाशने के लिए एक नई दिशा प्राप्त हुई ।

कार्यक्रम के अंत में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए छात्रों ने बताया कि यह कार्यक्रम उनके लिए अत्यंत उपयोगी प्रतीत हुआ । छात्रों को ज्ञान के एक अलग दुनिया में ले जाने में सभी संकाय सफल हुए हैं । सभी प्रतिभागियों को एच ओ सी एल द्वारा प्रायोजित मेमेंटो भी प्रदान किए गए ।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड में दिनांक 28.10.2024 से 03.11.2024 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2024 मनाया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024 की प्रस्तावना के रूप में, एचओसीएल ने निवारक सतर्कता उपायों पर ध्यान केंद्रित करते हुए तीन महीने का अभियान (16 अगस्त 2024 से 15 नवंबर 2024) चलाया।

एचओसीएल में निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित की गईं,

क. 18.09.2024 को एचओसीएल में 'ईमानदारी एक जीवन शैली' विषय पर एक संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र का संचालन श्री राहुल सुभाष जगताप, आईएसएस सीवीओ, एचओसीएल और श्री संजय अठेवाला डीजीएम (सतर्कता), आरसीएफ ने किया। कार्यक्रम में सभी विभागों के प्रमुख और अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए।

ख. क्षमता निर्माण कार्यक्रम के अंतर्गत निम्नलिखित सत्र आयोजित किए गए।

1. संबंधित कर्मचारियों के लिए 23.09.2024 को जेम (GeM) कार्यक्षमताओं और खरीद प्रक्रिया पर एक प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया। जेम (GeM) अधिकारी श्री मनेश मोहन ने इस सत्र का संचालन किया।

अभिलाष आर.
वरिष्ठ सतर्कता अधिकारी एवं मुख्य प्रबंधक
(मानव संसाधन)

2. 08.10.2024 को एचओसीएल में कर्मचारियों के लिए 'साइबर स्वच्छता और सुरक्षा' पर एक प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया। दूरसंचार विभाग के आईटीएस श्री लोगेश कुमार वी ने इस सत्र का संचालन किया।
3. कंपनी के मैनुअल/नीतियों/दिशानिर्देशों के अद्यतनीकरण पर सीवीसी दिशानिर्देशों के अनुपालन के लिए, एचओसीएल की कार्य नीति, खरीद नीति और मानव संसाधन नीति को अद्यतन किया गया है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024 के प्रचार के लिए, फैक्टरी परिसर के अंदर और बाहर प्रमुख स्थानों पर सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2024 के पालन के विवरण वाले बैनर प्रदर्शित किए गए। कार्यक्रमों की तस्वीरें एचओसीएल के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अपलोड की गईं।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024 के दौरान आयोजित कार्यक्रम

सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2024 का आयोजन 28.10.2024 को सुबह 11 बजे प्रशासनिक ब्लॉक के सामने सीएमडी श्री सजीव बी द्वारा सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाकर शुरू हुआ। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, भारत के प्रधानमंत्री से प्राप्त संदेशों को कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा पढ़ा गया। रसायन एवं उर्वरक मंत्री और सीवीसी से प्राप्त संदेशों को भी वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा पढ़ा गया। अभिलाष आर, वरिष्ठ सतर्कता अधिकारी ने सभा को संबोधित किया और सतर्कता जागरूकता सप्ताह के पालन के महत्व को समझाया और सप्ताह के दौरान आयोजित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में भी बताया।

दूसरे दिन कर्मचारियों के लिए 'नैतिकता और शासन' विषय पर एक संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया। डॉ. रंजना मेरी वर्गीस, डीन, एक्सटर्नल प्रोग्राम्स, एक्सआईएमई ने सत्र का संचालन किया। इसके अलावा, वीएचएसएस, इरुम्बनम के 11वीं कक्षा के छात्रों के लिए 'राष्ट्र की समृद्धि के लिए अखंडता की संस्कृति' विषय पर एक निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में बत्तीस छात्रों ने भाग लिया।

तीसरे दिन, एचओसीएल के कर्मचारियों के लिए 'दैनिक जीवन में व्यक्तिगत ईमानदारी का महत्व' विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई।

पांचवें दिन सुबह 11 बजे कंपनी के कर्मचारियों के लिए सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें शिक्षुओं सहित 19 कर्मचारियों ने भाग लिया।

कर्मचारियों के लिए सीडीए नियमों, सतर्कता मामलों आदि पर एक संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया। वरिष्ठ सतर्कता अधिकारी श्री अभिलाष आर. ने सत्र का संचालन किया। उसी दिन दोपहर 3 बजे एक भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित की गई जिसका विषय था 'राष्ट्र की समृद्धि के लिए अखंडता की संस्कृति'।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024 का समापन समारोह 04.11.2024 को आयोजित किया गया। श्री एम जे जगदीश, मुख्य महा प्रबंधक (इंजीनियरिंग/उत्पादन/मानव संसाधन) एवं फैक्ट्री प्रबंधक ने समारोह की अध्यक्षता की। एचओसीएल में सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024 के पालन पर एक रिपोर्ट वरिष्ठ सतर्कता अधिकारी द्वारा प्रस्तुत की गई।

कम्प्रेस्ड एयर फोम सिस्टम

संदीप
मुख्य प्रबन्धक, फायर एंड सेफ़्टी

सीएएफ़एसः अग्निशामक प्रणाली में क्रांति

अग्नि सुरक्षा की दुनिया में प्रौद्योगिकी का विकास लगातार हो रहा है ताकि अग्निशामक प्रणालियों की दक्षता और प्रभावशीलता में सुधार हो सके। हाल के वर्षों में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि 'कम्प्रेस्ड एयर फोम सिस्टम' (सीएएफ़एस) का प्रारम्भ है। इस अभिनव प्रौद्योगिकी ने आग बुझाने के तरीके को पुनःपरिभाषित किया है, और पारंपरिक अग्निशामक विधियों की तुलना में कई लाभ प्रदान किए हैं। एचओसीएल ने हाल ही में प्रौद्योगिकी सुधार के हिस्से के रूप में दो (50 लीटर क्षमता) सीएएफ़एस अग्निशामक प्रणाली खरीदी है।

सीएएफ़एस क्या है?

कम्प्रेस्ड एयर फोम सिस्टम (सीएएफ़एस) को आग बुझाने के लिए फोम को हवा और पानी के साथ मिलाकर उपयोग किया जाता है। यह मिश्रण अग्निशामक नली के माध्यम से वितरित किया जाता है, जो केवल पानी या फोम की तुलना में अधिक प्रभावी ढंग से आग को बुझाता है।

सीएएफ़एस की प्रक्रिया में तीन प्रमुख घटक होते हैं:

1. पानीः फोम कंसंट्रेट ले जाने के लिए मुख्य माध्यम के रूप में काम करता है।
2. फोम कंसंट्रेटः एक विशेष रासायनिक एजेंट जो पानी के साथ मिलकर फोम बनाता है। यह फोम जलती सामग्री की सतह पर एक स्थिर परत बनाता है, ज्वाला को दबाता है और पुनः प्रज्वलन को रोकता है।
3. कम्प्रेस्ड एयरः हवा फोम मिश्रण को हवादार करती है, जिससे हल्का और फैलने वाला फोम बनता है।

सीएएफ़एस कैसे काम करता है?

प्रक्रिया की शुरुआत पानी और फोम कंसंट्रेट के मिश्रण से होती है। यह मिश्रण फिर एक फोम जनरेटर या नोजल में

कम्प्रेस्ड एयर के साथ मिलाया जाता है। परिणामस्वरूप, एक घना, स्थिर फोम उत्पन्न होता है जो आग पर लगाया जाता है। फोम हवा और आग के बीच एक अवरोध के रूप में काम करता है, जिससे ज्वाला की ऑक्सीजन आपूर्ति कट जाती है और अग्निशामन की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाता है।

सीएएफ़एस के लाभ

1. उन्नत अग्निशामनः सीएएफ़एस द्वारा बनाए गए फोम को केवल पानी की तुलना में बड़े क्षेत्र को ढकने और सतहों पर चिपकने की क्षमता होती है। यह उच्च पवन या अत्यधिक तापमान जैसे चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में अधिक व्याप्त होने देता है और प्रभावी ढंग से आग बुझा देता है।
2. पानी का कम उपयोगः सीएएफ़एस को पारंपरिक अग्निशामक विधियों की तुलना में काफी कम पानी की आवश्यकता होती है। इससे पानी की बचत होती है और परिसंपत्ति को पानी से होनेवाले नुकसान का जोखिम और समग्र रूप से सफाई के प्रयास कम करता है।
3. बेहतर दृश्यताः सीएएफ़एस द्वारा निर्मित फोम एक मोटी, सफेद परत बनाता है जो धुएं के वातावरण में दृश्यता को बेहतर बनाता है। इससे अग्निशामक कर्मचारियों को सुरक्षित और प्रभावी तरीके से दृश्यता में सहायता मिलती है।
4. विविधताः विभिन्न प्रकार की आग पर सीएएफ़एस का उपयोग किया जा सकता है, जिसमें ज्वलनशील तरल और विद्युत अग्नि शामिल हैं। इसकी विविधता इसे विभिन्न अग्निशामक परिदृश्यों में मूल्यवान बनाती है।
5. पुनःप्रज्वलन का कम जोखिमः सीएएफएस द्वारा प्रदान की गई फोम परत सतह को सील करके पुनः आग लगने की संभावना को समाप्त करके उसे रोकने में मदद करती है।

सीएएफ़एस के अनुप्रयोग

सीएएफ़एस का उपयोग विभिन्न अग्निशामक अनुप्रयोगों में किया जाता है, जिसमें शामिल हैं:

- फायर ट्रक्सः कई आधुनिक फायर ट्रक्स सीएएफ़एस से लैस होते हैं जो अग्निशामक कर्मियों को अत्याधुनिक अग्निशामक उपकरण प्रदान करते हैं।
- औद्योगिक सेटिंग्सः सीएएफ़एस का उपयोग औद्योगिक वातावरण में किया जाता है जहां बड़ी मात्रा में ज्वलनशील सामग्री मौजूद होती है।
- एयरपोर्ट अग्निशामकः यह प्रणाली विमानन अग्निशामक में अत्यधिक प्रभावी है, जहां ईंधन की आग को तेजी से बुझाना महत्वपूर्ण होता है।

चुनौतियाँ और विचार

हालांकि सीएएफ़एस कई लाभ प्रदान करता है, इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी हैं। सीएएफ़एस उपकरण की प्रारंभिक लागत पारंपरिक प्रणालियों की तुलना में अधिक हो सकती है। इसके अलावा, सीएएफ़एस इकाइयों की रखरखाव और सेवा के लिए विशिष्ट ज्ञान और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। अग्निशामक कर्मचारियों के लिए उचित प्रशिक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है ताकि यह प्रणाली प्रभावी और सुरक्षित ढंग से उपयोग की जा सके।

निष्कर्ष

कम्प्रेस्ड एयर फोम सिस्टम (सीएएफ़एस) अग्निशामक प्रौद्योगिकी में एक महत्वपूर्ण छलांग का प्रतिनिधित्व करता है। पानी, फोम कंसंट्रेट और कम्प्रेस्ड एयर को मिलाकर, सीएएफ़एस आग से निपटने के लिए एक शक्तिशाली और प्रभावी विधि प्रदान करता है। इसके लाभ, जिसमें उन्नत अग्निशामन, घटित पानी का उपयोग, और बेहतर दृश्यता शामिल है, इसे आधुनिक अग्निशामक संचालन के लिए एक मूल्यवान उपकरण बनाते हैं। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी उन्नत होती जाती है, सीएएफ़एस अग्नि सुरक्षा और संरक्षण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की संभावना है।

विस्तारित निर्माता उत्तरदायित्व

तरुणदेव ए.पी.
मुख्य प्रबन्धक, फायर एंड सेफ़्टी

विस्तारित निर्माता उत्तरदायित्व (ईपीआर): सतत कचरा प्रबंधन की दिशा में एक रास्ता

पर्यावरणीय चिंताओं के बढ़ने और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के अधिक स्पष्ट होने के साथ, सरकारें, व्यवसाय और उपभोक्ता प्रभावी तरीके से कचरा प्रबंधन और पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने के लिए नए तरीके खोज रहे हैं। इस निरंतरता की खोज में एक तरीका जो प्रमुखता प्राप्त कर रहा है, वह है विस्तारित निर्माता उत्तरदायित्व (ईपीआर)। ईपीआर उत्पादों के जीवनचक्र और कचरा प्रबंधन के तरीके में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है, जो उत्पादों के अंत-जीवन चरण में निर्माताओं की भूमिका को प्रमुखता देता है।

विस्तारित निर्माता उत्तरदायित्व (ईपीआर) क्या है?

विस्तारित निर्माता उत्तरदायित्व (ईपीआर) एक पर्यावरणीय नीति दृष्टिकोण है जो निर्माताओं को उनके उत्पादों के पूरे जीवनकाल, जिसमें उपभोक्ता के बाद का कचरा भी शामिल है, के लिए जिम्मेदार मानता है। केवल उत्पादों के निर्माण और बिक्री पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, ईपीआर कार्यक्रमों में उत्तरदायित्व को अंत-जीवन चरण तक विस्तारित किया जाता है, जिसका अर्थ है कि निर्माताओं, आयातकों या वितरकों को उनके उत्पादों की निपटान, पुनर्चक्रण या उपचार का प्रबंधन करना होता है जब वे उपयोग में नहीं रहते।

ईपीआर कैसे काम करता है?

ईपीआर योजनाओं के तहत, निर्माताओं को या तो अपने उत्पादों की संग्रहण और पुनर्चक्रण के लिए प्रत्यक्ष जिम्मेदारी लेनी होती है या एक सामूहिक प्रणाली में वित्तीय रूप से योगदान देना होता है जो इन गतिविधियों का प्रबंधन करती है। ईपीआर कार्यक्रमों के मुख्य घटक आमतौर पर शामिल होते हैं:

1. उत्पाद डिजाइन: ईपीआर निर्माताओं को उनके पूरे जीवनकाल को ध्यान में रखकर उत्पादों को डिजाइन करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इसका मतलब है कि स्थायित्व, मरम्मत की योग्यता और पुनर्चक्रण के लिए डिजाइन करना, जिससे कुल मिलाकर कचरा कम हो।

2. वित्तीय जिम्मेदारी: निर्माताओं को कचरा प्रबंधन प्रणालियों के लिए शुल्क का भुगतान करने या अपने खुद के संग्रहण और पुनर्चक्रण कार्यक्रम स्थापित करने की आवश्यकता हो सकती है।

3. संचालनात्मक जिम्मेदारी: कुछ मामलों में, निर्माताओं को उत्पादों की वापसी और पुनर्चक्रण की लॉजिस्टिक्स में प्रत्यक्ष रूप से शामिल होना पड़ता है, वापसी किए गए उत्पादों को संभालने और उनके प्रसंस्करण का प्रबंधन करने के लिए प्रणालियों की स्थापना करना।

4. रिपोर्टिंग और अनुपालन: ईपीआर कार्यक्रम अक्सर कचरा प्रबंधन गतिविधियों की रिपोर्टिंग और नियमों के अनुपालन की आवश्यकताएं शामिल करते हैं, जो प्रगति को ट्रैक करने और समय के साथ सिस्टम को सुधारने में मदद करते हैं।

ईपीआर के ढांचे में, विभिन्न संस्थाएं विशिष्ट भूमिकाएं निभाती हैं ताकि उत्पादों और पैकेजिंग को पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार तरीके से प्रबंधित किया जा सके। इस संदर्भ में दो प्रमुख श्रेणियाँ हैं 'निर्माता' और 'ब्रंड मालिक।' यहाँ इन भूमिकाओं का अंतर और इंटरसेक्शन कैसे है:

1. निर्माता

परिभाषा: निर्माता वे संस्थाएँ हैं जो बाजार के लिए उत्पादों का निर्माण या आयात करती हैं। इनमें निर्माता,आयातक और वे लोग शामिल हो सकते हैं जो उत्पादों को बाजार में पेश करते हैं।

जिम्मेदारियाँ:

- उत्पाद जीवनकाल प्रबंधन: निर्माता अपने उत्पादों के पूरे जीवनकाल के लिए जिम्मेदार होते हैं, डिजाइन और उत्पादन से लेकर उपभोक्ता के बाद के कचरे के प्रबंधन तक।
- ईपीआर नियमों का अनुपालन: उन्हें उन नियमों का पालन करना होता है जो उन्हें अपने उत्पादों को पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार तरीके से वापस लेने, पुनर्चक्रण करने या निपटाने की आवश्यकता होती है।
- रिपोर्टिंग: निर्माताओं को सृजित और प्रबंधित कचरे की मात्रा के साथ ही कचरे की प्रभावशीलता की रिपोर्टिंग करनी होती है और उनके पुनर्चक्रण और कचरा प्रबंधन पहलों पर।
- वित्तीय योगदान: निर्माताओं को कचरा प्रबंधन प्रणालियों के लिए वित्तीय रूप से योगदान देने की आवश्यकता हो सकती है या अपने स्वयं के संग्रहण और पुनर्चक्रण कार्यक्रम स्थापित करने की आवश्यकता हो सकती है।

2. ब्रांड मालिक

परिभाषा: ब्रांड मालिक वे संस्थाएँ हैं जो ब्रांड या ट्रेडमार्क की मालिक होती हैं जिसके तहत उत्पाद विपणन किए जाते हैं, लेकिन वे उत्पादों के निर्माता या आयातक नहीं हो सकते। ब्रांड मालिकों में कंपनियाँ शामिल हो सकती हैं जो ब्रांडों को लाइसेंस देती हैं, फ्रैंचाइजर्स, या वे संस्थाएँ जो अपने ब्रांड नाम के तहत उत्पादों का विपणन करती हैं।

जिम्मेदारियाँ:

- ईपीआर अनुपालन: ब्रांड मालिक यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार होते हैं कि उनके ब्रांड के तहत बेचे गए उत्पाद ईपीआर नियमों के अनुसार प्रबंधित किए जाएं। इसमें यह सुनिश्चित करना शामिल है कि कचरा सही तरीके से एकत्रित, पुनर्चक्रित और निपटाया जाए।
- निर्माताओं के साथ सहयोग: हालांकि ब्रांड मालिक स्वयं उत्पाद का निर्माण नहीं कर सकते, उन्हें निर्माताओं और अन्य हितधारकों के साथ मिलकर ईपीआर आवश्यकताओं का अनुपालन सुनिश्चित करना होता है।
- कचरा प्रबंधन योजनाएँ विकसित करना: ब्रांड मालिकों को अक्सर अपने ब्रांड के तहत बेचे गए उत्पादों के लिए कचरा प्रबंधन योजनाएँ विकसित और लागू करने की आवश्यकता होती है।
- उपभोक्ता जागरूकता: उन्हें अपने उत्पादों के सही निपटान और पुनर्चक्रण के बारे में उपभोक्ताओं को शिक्षित करने के लिए पहल करने की आवश्यकता हो सकती है या उनका समर्थन करना पड़ सकता है।

एचओसीएल केवल एक ब्रांड मालिक है और प्लास्टिक उत्पादों का निर्माण या आयात नहीं करता है। एचओसीएल पैकेजिंग सामग्री खरीदता है ताकि हाइड्रोजन पेरोक्साइड बेचा जा सके। एचओसीएल को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसकी पैकेजिंग के उत्पादों के निर्माता ईपीआर नियमों का अनुपालन करें और पैकेजिंग सामग्री के अंत-जीवन निपटान का प्रबंधन करें।

ईपीआर के लाभ

ईपीआर पर्यावरण और समाज दोनों के लिए कई लाभ प्रदान करता है:

1. कचरा कमी: ईपीआर निर्माताओं को उनके अंत-जीवन को ध्यान में रखते हुए उत्पादों को डिजाइन करने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिससे कचरा उत्पादन कम होता है और पुनर्चक्रण और पुनः उपयोग को बढ़ावा मिलता है।
2. संसाधन दक्षता: ईपीआर कार्यक्रम मूल्यवान सामग्रियों की वसूली और पुनः उपयोग सुनिश्चित करके संसाधन उपयोग की दक्षता को सुधार सकते हैं, बजाय इसके कि वे फेंक दिए जाएं।
3. नवाचार: कचरा कम करने और उत्पाद स्थिरता बढ़ाने के दबाव के साथ, ईपीआर उत्पाद डिजाइन और सामग्री प्रबंधन में नवाचार को प्रेरित कर सकता है।
4. लागत बचत: हालांकि ईपीआर कार्यान्वयन से जुड़े खर्च होते हैं, यह दीर्घकालिक बचत कर सकता है क्योंकि यह नगरपालिका कचरा प्रबंधन प्रणालियों पर दबाव कम करता है और पर्यावरणीय सफाई की लागत से बचाता है।
5. उपभोक्ता जागरूकता: ईपीआर उपभोक्ताओं को उनके खरीदारी के पर्यावरणीय प्रभावों के बारे में जागरूक करता है और जिम्मेदार निपटान प्रथाओं को प्रोत्साहित करता है।

चुनौतियाँ और विचार

हालांकि ईपीआर एक आशाजनक ढांचा प्रदान करता है कचरा प्रबंधन में सुधार के लिए, इसके सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं:

1. क्रियान्वयन जटिलता: प्रभावी ईपीआर कार्यक्रमों को डिजाइन और लागू करना जटिल हो सकता है, जिसमें निर्माताओं, सरकारों और कचरा प्रबंधन संस्थाओं के बीच समन्वय की आवश्यकता होती है।
2. लागत वितरण: विभिन्न उद्योगों में निर्माताओं के बीच लागतों का उचित और समान वितरण निर्धारित करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
3. वैश्विक भिन्नता: ईपीआर कार्यक्रम देशों और क्षेत्रों में बहुत भिन्न होते हैं, जो कार्यान्वयन और प्रभावशीलता में असंगतता का कारण बनता है।
4. निगरानी और प्रवर्तन: ईपीआर नियमों के अनुपालन को सुनिश्चित करना और ईपीआर सिस्टम के प्रदर्शन की निगरानी के लिए मजबूत निगरानी और प्रवर्तन तंत्र की आवश्यकता होती है।

ईपीआर का भविष्य

जैसे-जैसे वैश्विक समुदाय पर्यावरणीय चुनौतियों से जूझता है, ईपीआर कचरा प्रबंधन के लिए एक अग्रणी दृष्टि कोण के रूप में उभरता है। निर्माताओं पर जिम्मेदारी अंतरित करने और सतत प्रथाओं को प्रोत्साहित करने के माध्यम से, ईपीआर कचरा कम करने, संसाधनों को संरक्षित कर और एक सर्कुलर अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

संक्षेप में, विस्तारित निर्माता उत्तरदायित्व उत्पादों के जीवनचक्र के प्रबंधन के लिए अधिक टिकाऊ और जिम्मेदार दृष्टिकोण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उत्पादकों को उनके उत्पादों के जीवन-काल के अंत के लिए उत्तरदायी ठहराकर, ईपीआर न केवल अपशिष्ट और पर्यावरण संबंधी चिंताओं को संबोधित करता है, बल्कि नवाचार और संसाधन दक्षता को भी बढ़ावा देता है। जैसे-जैसे हम पर्यावरण जागरूकता के भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं, ईपीआर संभवतः वैश्विक अपशिष्ट प्रबंधन रणनीतियों का एक अभिन्न अंग बन जाएगा।

कंपनी के मुनाफे को बढ़ाने में इन्वेंट्री प्रबंधन और सामग्री विभाग की भूमिका

विग्नेश मोहन
गोडाउन स्टोर कीपर

आज के गतिशील कारोबारी माहौल में, प्रभावी इन्वेंट्री प्रबंधन और एक अच्छी तरह से समन्वित सामग्री विभाग किसी कंपनी की लाभप्रदता के लिए महत्वपूर्ण चालक हैं। ये कार्य, जिन्हें अक्सर अनदेखा किया जाता है, संचालन को अनुकूलित करने, लागत कम करने और अंततः अंतिम परिणाम को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

लागत को सुव्यवस्थित करना और नकदी प्रवाह में सुधार करना:

कुशल इन्वेंट्री प्रबंधन यह सुनिश्चित करता है कि पूंजी अनावश्यक रूप से अतिरिक्त स्टॉक में बंधी न रहे। इष्टतम इन्वेंट्री स्तरों को बनाए रखने और जस्ट-इन-टाइम (JIT) इन्वेंट्री जैसी रणनीतियों को नियोजित करके, कंपनियां इन्वेंट्री रखने से जुड़ी लागतों को कम कर सकती हैं, जैसे कि वेयर हाउसिंग, बीमा और खराब होना। यह रणनीतिक दृष्टिकोण

नकदी प्रवाह को मुक्त करता है, जिससे धन को विकास पहलों या अन्य परिचालन आवश्यकताओं की ओर पुनः निर्देशित किया जा सकता है। सामग्री विभाग आपूर्तिकर्ता संबंधों का प्रबंधन करके और अनुकूल शर्तों पर बातचीत करके लागत बचत और बेहतर नकदी प्रवाह प्रबंधन में योगदान देकर इसका समर्थन करता है।

परिचालन दक्षता बढ़ाना:

एक सुव्यवस्थित इन्वेंट्री प्रबंधन प्रणाली परिचालन अक्षमताओं को कम करती है। यह सुनिश्चित करता है कि आवश्यकता पड़ने पर सामग्री और उत्पाद उपलब्ध हों, जिससे उत्पादन और ऑर्डर पूर्ति में देरी न्यूनतम हो। इस दक्षता का परिणाम तेजी से काम पूरा करने में लगने वाला समय, बेहतर ग्राहक संतुष्टि और उच्च समग्र उत्पादकता है। सामग्री विभाग सामग्री की खरीद, भंडारण और वितरण में समन्वय, स्थापित करके इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, तथा यह सुनिश्चित करता है कि परिचालन बिना किसी रुकावट के सुचारू रूप से चलता रहे।

अपशिष्ट को न्यूनतम करना और होल्डिंग लागत को कम करना:

प्रभावी इन्वेंट्री प्रबंधन, इन्वेंट्री स्तर को वास्तविक मांग के अनुरूप बनाकर अपव्यय को न्यूनतम करने में मदद करता है। अधिक ऑर्डर देने से अप्रचलन और होल्डिंग लागत में वृद्धि हो सकती है, जबकि कम ऑर्डर देने से स्टॉक खत्म हो सकता है और बिक्री छूट सकती है। मांग पूर्वानुमान और इन्वेंट्री टर्नओवर

विश्लेषण जैसी इन्वेंट्री नियंत्रण तकनीकों को नियोजित करके, कंपनियां संतुलित स्टॉक स्तर बनाए रख सकती हैं, बर्बादी को कम कर सकती हैं और होल्डिंग लागत कम कर सकती हैं। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सटीक इन्वेंट्री ट्रैकिंग और मांग पूर्वानुमान में सामग्री विभाग की भूमिका महत्वपूर्ण है।

ग्राहक संतुष्टि और बिक्री में सुधार

विश्वसनीय इन्वेंट्री प्रबंधन यह सुनिश्चित करता है कि ग्राहक की मांग को पूरा करने के लिए उत्पाद उपलब्ध हों, जिससे संतुष्टि बढ़ती है और व्यापार दोबारा शुरू होता है। सटीक स्टॉक स्तर स्टॉक खत्म होने और अधिक स्टॉक की स्थिति को रोकता है, जो ग्राहक संबंधों और बिक्री के अवसरों को नुकसान पहुंचा सकता है। सामग्री विभाग समय पर सामग्री की खरीद और वितरण सुनिश्चित करके इसका समर्थन करता है, जिससे उत्पादों की स्थिर आपूर्ति बनाए रखने में मदद मिलती है। ग्राहकों की आवश्यकताओं के साथ यह संरेखण बिक्री में वृद्धि करता है तथा लाभप्रदता को बढ़ाता है।

रणनीतिक निर्णय लेने में सुविधा:

इन्वेंटरी प्रबंधन बिक्री प्रवृत्तियों, इन्वेंटरी टर्नओवर और आपूर्तिकर्ता प्रदर्शन के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है। यह डेटा रणनीतिक निर्णय लेने के लिए आवश्यक है, जिसमें इन्वेंट्री पुनःपूर्ति, मूल्य निर्धारण रणनीतियां और प्रचार योजना शामिल हैं। सामग्री विभाग सामग्री की उपलब्धता और खरीद लागत के बारे में सटीक और समय पर जानकारी प्रदान करके योगदान देता है, जिससे प्रबंधन को व्यावसायिक उद्देश्यों और लाभप्रदता लक्ष्यों के अनुरूप निर्णय लेने में मदद मिलती है।

संक्षेप में, प्रभावी इन्वेंट्री प्रबंधन और एक अच्छी तरह से काम करने वाला सामग्री विभाग किसी कंपनी की लाभप्रदता के लिए अभिन्न अंग हैं। लागतों को अनुकूलित करके, परिचालन दक्षता को बढ़ाकर, अपव्यय को न्यूनतम करके, ग्राहक संतुष्टि में सुधार करके, तथा रणनीतिक निर्णय लेने में सुविधा प्रदान करके, ये कार्य किसी कंपनी के वित्तीय स्वास्थ्य और प्रतिस्पर्धात्मक लाभ में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इन्वेंट्री प्रबंधन और सामग्री प्रबंधन में सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाने से न केवल लागतों को नियंत्रित करने में मदद मिलती है, बल्कि कंपनी को सतत विकास और अधिक लाभप्रदता की स्थिति में लाने में भी मदद मिलती है।

मातृभाषा - कल, आज और कल...

षाजी आर.
यांत्रिक अभियंता

मातृभाषा अपनी माँ की ममता रूपी आँचल का शुद्ध मधुरतम अमृत है। मलयालम के महाकवि वल्लतोल ने कहा था कि "मट्टुल्ला भाषाकल केवलम धात्रिमार, मर्थ्यनुपेट्टम्मा तन भाषातान"। यानि अन्य सभी भाषाएँ केवल सौतेली माँ है, मानव को अपनी भाषा माँ ही है। महाकवि का कहना एकदम सच है। हमारी सोच, तर्क और कल्पना का विकास मातृभाषा से होता है। भाषाई सन्दर्भ से भी व्यक्तित्व निखर आता है। मातृभाषा ने ही हमें यह सिखाया है कि अक्षरों का स्थान-परिवर्तन होने पर साक्षर भी राक्षस बन जाता है। भाषा के विकास के विविध चरणों पर अगर नज़र डाले तो पता चलेगा कि भाषा को आज की स्थिति में पहुँचने के लिए कितना परिवर्तन झेलना पड़ा है।

कल: पुराने ज़माने में शूद्र जाति शिक्षा से वंचित रही, यहाँ तक कि उन्हें सुनने का भी अधिकार नहीं था, अगर गलती से सुन लिया तो उनके कान तोड़ दिए जाते थे, सच्चाई कहने से ब्रूनो को जला दिया गया, एकलव्य को अपनी शिक्षा के कारण अंगूठी खोनी पड़ी। आज़ादी की बात करने पर भगतसिंह को फांसी लेनी पड़ी। जब अभिजात वर्ग सामाजिक नियंत्रणों का आधिकार रखते थे, तब से लेकर किए गए अनेक परिवर्तनकारी संघर्षों के माध्यम से सामाजिक निर्धारण का अधिकार सामान्य जनता के पास पहुंचा, जिसके लिए इतिहास साक्षी है, भाषा का भी ऐसा ही इतिहास है।

आज: लार्ड मैकाले की भाषा नीति अब नहीं है। उस समय की यांत्रिक शैली भी नहीं है। आज भाषा मधुर संगीत रूपी अमृत बरसाने वाली कामधेनु है, जो सभी ओर से विविध

धाराओं के साथ प्रवहित और प्रसारित हो रही है, जिससे आज भारत की भाषाओं को स्वीकृति एवं लोकप्रियता मिल रही है। मलयालम भाषा केरल की एक बृहत एवं जैविक पूंजी है, जो यहाँ के इतिहास का प्रतिनिधित्व भी करती है तथा यह अपनी जनता की संस्कृति का वाहक भी है। केरल में हुई ऐतिहासिक आंदोलनों, सभी घटनाओं और संघर्षों का अनुभव हमने इसी भाषा के माध्यम से किया था। लेकिन आज इस मातृभाषा की दशा में उस प्रकार की नहीं है। उसकी पुरानी क्षमता, सौंदर्य और सरलता आज घटती जा रही है। मलयालम भाषा का प्रयोग कम हो रहा है। मलयालम बोलने में लोग कतराते हैं। आजकल दो तरह के मलयाली समाज देखे जा सकते हैं। पहला, किसी भी बात पर प्रतिक्रिया न देनेवाला समाज और दूसरा औपचारिक वार्तालाप पर सीमित समाज। बातचीत में वह माधुर्य अब नहीं है, कामचलाऊ भाषा पर निर्भर लोग अपनी दुनिया में मस्त है। दिल खोलकर बोलने वालों की कमी आजकल बहुत ज़्यादा महसूस की जा रही है, चाहे वह घर हो या फिर कार्यालय, सामाजिक संगठन, संस्थाएं, सभी जगह यही है स्थिति। ऐसे में मातृभाषा की शक्ति कम होती जा रही है और उसकी जैव-प्रवृत्ति नष्ट होती जा रही है। न बोलने वाली या प्रतिक्रिया न व्यक्त करने वाली जनता एक प्रकार से दुष्ट अधिकारियों की रक्षा करती है। बोलते हुए लोकतंत्र को जीवित रखना चाहिए।

मलयाली मलयालम से दूर जा रहे हैं जबकि तमिल भाषी अपनी भाषा पर गर्व करते हैं और अपनी भाषा को बचाने के लिए वे किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार होते हैं। तमिल भाषियों के इस भाषा-बोध से हमें सीखना चाहिए। मातृभाषा सामाजिक संबंधों और सामाजिक आदान-प्रदान का आधार है। इसलिए, आजका समय ऐसा है जब दुनिया मातृभाषा को राजकाज की भाषा बनाने की तैयारी में जुटी है। मातृभाषा को राजभाषा बनाने से सरकारी कामकाज में पारदर्शिता आएगी और वह लोकतांत्रिक होगी। इससे भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी में कमी आएगी और कामकाज में होने वाली देरी समाप्त हो जाएगी। मातृभाषा में कार्य करने वाले कार्यालय में आपसी समझ से कार्यों में निखार आ जाएगी और इस प्रकार विकास और योजना के साधन के रूप में भी भाषा विकसित होगी तो उसकी जीवंतता बढ़ जाएगी। एक ज़माने में उन्नत कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के आगमन ने मातृभाषा लुप्त होने की आशंका रही थी, लेकिन मातृभाषा ने उस मशीन को अपने अधीन कर लिया, जो यह दर्शाता है कि अपनी सीमाओं के होते हुए भी उसने अपना अस्तित्व न केवल मिटने नहीं दिया बल्कि उसको बुलंद भी कर दिया।

कल: प्रौद्योगिकी ज्ञान-विस्फोट को बढ़ावा देने वाले इस युग में भाषा की शक्ति और जीवंतता विश्व व्यवस्था को बदल देगी। आधुनिक समय में, मानव समाज भाषा से निर्धारित और परिभाषित होता है न कि किसी अन्य चीज़ से। यह मानव का मिलन और जुटाव से युक्त मानवीय अनुभव का सार है।

मातृभाषा के संरक्षण और उसके आधुनिकीकरण एवं विस्तार के लिए सतत प्रयास की जरूरत है। इससे सदियों की सांस्कृतिक विरासत और ज्ञान संरक्षित होते हैं। हमें विश्व की भाषाई विविधता को स्वीकार करते हुए आगे बढ़ना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आने वाली पीढ़ियाँ अपनी मातृभाषा की समृद्धि और सुंदरता का आनंद ले सकें। मातृभाषा केवल संचार का साधन नहीं है; यह हमारी संस्कृति का आधार भी है। हमारे विचार, भावनाएँ और अनुभव तब पूर्ण और व्यापक हो जाते हैं जब हम उन्हें अपनी मातृभाषा में व्यक्त करते हैं। फिर भी, हम एक ऐसे समय जी रहे हैं जब भाषाएँ, देश और सीमाएँ मिटती जा रही हैं। यहीं पर रबींद्रनाथ टैगोर का कथन प्रासंगिक होता है - 'हमें एक पौधे उगाने के लिए केवल एक मिट्टी के बर्तन की आवश्यकता होती है, लेकिन एक विशालकाय पेड़ को उगाने के लिए पृथ्वी के विशाल ह्रदय की आवश्यकता होती है।' इसका सार यह है कि लोगों को अपनी मातृभाषा पर आधारित बहुभाषी शिक्षा के माध्यम से अपने सपनों को साकार करने का प्रयास करना चाहिए। हम भारतीय 'वसुधैव कुटुंबकम' के व्यापक दृष्टिकोण का पालन करते हैं। आइए हम दुनिया भर में मौजूद भाषाओं की समृद्ध विविधता का जश्न मनाएं। चूंकि भाषा सामाजिक विकास का एक साधन भी है, इसलिए मातृभाषाओं की कोई सीमा नहीं होनी चाहिए। जब भाषा अस्तित्व की आदिम रूपे से निकल कर अब श्रेष्ठ भाषा के पद पर आसीन हो गई है तो उसे बेजुबानों की आवाज बनने दें। वह सार्वभौमिक मानवता की रोशनी बने, चाहे उसे माँ का रूप दे या फिर सौतेली माँ का।

समृद्धि - कोच्चि का अपना भोजनालय

उषा पी.आर.
सहायक प्रबन्धक (एच आर)

कोच्चि शहर में गरीबी को कम करने के लिए कम बजट पर भोजन उपलब्ध कराने हेतु कोच्चि नगर निगम द्वारा समृद्धि@कोच्चि परियोजना शुरू की गई है। कोची नगर निगम के महापौर का सपना था भूख-मुक्त कोच्चि। इस सपने को साकार करने ही नहीं और सस्ते दर में गुणतापूर्ण भोजन प्रदान करने में वे सफल हुए। यह केरल का एकमात्र होटल रहा था जो अपने शुरुआत में 10 रूपए में भोजन उपलब्ध प्रदान करता था। अपने चौथे वर्ष में 10 रूपए के बदले 20 रूपए में इतना बढ़िया खाना और कहीं नहीं मिलेगा। यह केवल कोची निवासियों के लिए नहीं बल्कि कोची आनेवाले पर्यटकों, रेल यात्रियों एवं कोची शहर में काम करनेवाले बहुसंख्यक युवकों के लिए एक विश्वसनीय भोजनालय है जो चौबीस घंटे आजकल कार्यरत है। यहाँ कई प्रकार के भोजन आपको सस्ते में मिलेंगे जिसमें वेज और नॉन-वेज के सभी नए आइटम शामिल है। इसके अलावा फ्रेश जूस और चाय एवं स्नैक्स, आइसक्रीम भी उपलब्ध है।

कोची नगर निगम के महापौर श्री अनिलकुमार के शब्दों में कहे तो "समृद्धि की सफलता सामूहिक प्रयास और कड़ी मेहनत का प्रतीक है, जो यह साबित करती है कि एकीकृत प्रशासनिक सहायता से उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की जा सकती हैं। यह पहल, जो शुरू में केवल तीन महीने तक चलने की उम्मीद थी, दो साल तक फलती-फूलती रही, जिससे 72 परिवारों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहायता मिली। समृद्धि@कोच्चि आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रही है, जिसका लक्ष्य बिना दान और सब्सिडी के काम करना है। इसका लक्ष्य अधिक बिक्री के माध्यम से लाभप्रदता बढ़ाना है, जिससे प्राप्त आय का उपयोग कम लागत पर सार्वजनिक सेवाएँ प्रदान करने के लिए किया जा सके। कोच्चि नगर निगम से निरंतर समर्थन के साथ, समृद्धि दो साल के भीतर एक नया मॉडल बनाने की कल्पना करती है, इस परिवर्तनकारी यात्रा पर ईमानदारी से समर्थन और मार्गदर्शन चाहती है।"-

केरल के मशहूर महिला संगठन कुडुम्बश्री द्वारा संचालित इस लोकप्रिय होटल में एक ही समय 200 से अधिक लोगों को खाने की व्यवस्था की गयी है। 14 लोगों से शुरू हुआ था आज 72 कर्मचारी हैं। अपना कारोबार का दायरा भी बढ़ गया है। कोची में आयोजित होनेवाले कई कार्यक्रमों/ बैठकों के लिए भोजन प्रदना करने का दायित्व भो प्राप्त हो रहे हैं। यही इनके भोजन की विशेषता है। यहाँ काम करनेवाले भी खुश है क्योंकि विभिन्न ग्रेड में इनको मासिक आय 18000 रूपये से 30000 रूपये तक है। प्रतिदिन 5000 से अधिक लोगों को 3 बार भोजन परोसा जाता है।

आशा हैं कि इस तरह के भोजनालय हर शहर और प्रमुख केन्द्रों में अगर खोले तो सभी पर्यटकों और यात्रियों को लाभ मिलें और अच्छे खाने मिले। कोच्चि की समृद्धि दूसरे राज्यों के लिए मार्गदर्शक बने।

नारी शक्ति - सशक्त भारत का आधार

रमेश ओ.
मुख्य प्रबन्धक (एचआर-राजभाषा)

आज भारत की नारी हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। नारी शक्ति स्वस्थ समाज की शक्ति ही है। नारी को सशक्त किए बिना किसी समाज की प्रगति की कल्पना नहीं की जा सकती। संविधान शिल्पी डॉ भीमराव अंबेडकर ने कहा था कि 'मैं किसी देश और समाज की प्रगति उस समाज में महिलाओं की स्थिति से आँकता हूँ'।[1] यह बिलकुल सच्च है। दुनिया में महिला या नारी सशक्तिकरण के लिए हो रहे अथक प्रयासों से यह सिद्ध होता है कि नारी की शक्ति अनिवार्य है। पुरुष के बराबर स्त्री को एक गरिमामय और सम्मानजनक स्थान देने का प्रयास सालों से हो रहे हैं। इस दिशा में हम अग्रसर भी हैं। सशक्त नारी ही सशक्त समाज की नींव है। आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां नारी की उपस्थिति न हो। तमाम क्षेत्रों में नारी अपनी पहचान बना दी है। दुनिया में नारी को सम्मान, आदर और अधिकार प्राप्त हो रहे हैं। इसका आशय यह है कि समग्र विकास में चाहे वे परिवार के हो, समाज के हो, राष्ट्र के विकास के हो या फिर वसुधा के विकास संबंधी हो, नारी शक्ति का अपना महत्व है। इस तथ्य को विश्व की संस्थाएं और सभी सरकारों ने स्वीकार की है तथा उसको और सशक्त बनाने के लिए कार्यरत भी है।

वर्ष 2024 के अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस जो हर साल 8 मार्च को मनाया जाता है, में संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएन) का थीम रहा है "महिलाओं में निवेशः प्रगति में तेजी" यानि "Investment in Women : Accelerate Progress."। इससे जाहिर है भविष्य की सुरक्षा के लिए आपको महिलाओं को सशक्त करना है। यूएन के शब्दों में 'दुनिया कई संकटों का सामना कर रही है, जिसमें भू-राजनीतिक संघर्षों से लेकर बढ़ती गरीबी के स्तर और जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभाव शामिल है। इन चुनौतियों का समाधान केवल उन समाधानों से किया जा सकता है जो महिलाओं को सशक्त बनाते हैं। महिलाओं में निवेश करके, हम बदलाव ला सकते हैं और सभी के लिए एक स्वस्थ, सुरक्षित और समान दुनिया की ओर संक्रमण को गति दे सकते हैं।'[2] आपको विदित है विश्व में कई संकट विद्यमान है। एक ओर युद्ध की भीषण त्रासदी है, दूसरी ओर जलवायु परिवर्तन का संकट दुनिया झेल रही है। इस्राएल-फिलिस्टीन संघर्ष, उक्रैन- रूस युद्ध का विनाशकारी परिणाम महिलाओं और लड़कियों पर पड़ता है। साथ ही, वे पुरुष केंद्रित समाज में लिंग आधारित भेदभाव का शिकार हो रही है। सदियों से वे इसको झेलने के लिए विवश है। स्त्री की मुक्ति संघर्ष का अभियान आज भी चालू है।

भारत में वैदिक काल से नारियों की पूजा की जाती हैं, उनका आदर-सम्मान करते हैं। लेकिन समाज में बराबरी के

हक से वे वंचित रही। हमारे कवियों ने नारी शक्ति के महत्व पर रचनाएं की है। नारी को पुरुष के बराबर और उससे अधिक महत्व दिया है। विदेशी शासन के दौरान महिलाओं को घर के चार दीवार के भीतर सिमटने का प्रयास और उसी के अनुरूप उन्हें केवल भोग की वस्तु के रूप में सीमित किया गया और घर के बाहर न आने देती। रीतिकाल में शृंगार प्रवृत्तियों को प्रधानता मिली थी। स्त्री की छवि दरबार में अलंकृत करने और विलासिता के प्रतीक के रूप चित्रित की गई थी। लेकिन आधुनिक काल में मानवता के प्रतीक "श्रद्धा" के रूप में स्त्री का चित्रण किया गया। प्रगतिवादी कवि स्त्री को पुरुष से अधिक सम्मान दिया था। आज़ादी की लड़ाई में वीरांगनाओं की भूमिका हमारा इतिहास है। समाज में बदलाव लाने के लिए कई महिलाओं ने अपना जीवन अर्पित किया। स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका को महत्व देते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने महिला सशक्तिकरण पर बल दिया था। वे स्त्री-पुरुष असमानता को मिटाने का सबसे सशक्त और ताकतवार माध्यम के रूप शिक्षा को मानते थे।[4] उनकी दृष्टि में स्त्री एक जागरूक नागरिक है। उनकी भूमिका की अनदेखी नहीं की जा सकती। किसी ने सही कहा है कि जब आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं तो आप केवल एक आदमी को शिक्षा दे रहे हैं। जब आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते हैं। इसीलिए एक स्वस्थ भविष्य के लिए स्त्री शिक्षा वेहद जरूरी है।

स्वतंत्रता आंदोलन और कई सामाजिक आंदोलन के फलस्वरूप सती, बाल विवाह जैसे अनेक अनाचारों को समाप्त कर विधवा विवाह को प्रोत्साहन मिला था। पुरुष के बराबर स्त्री को स्वतंत्र मानव के रूप में गरिमा एवं सम्मान देने के लिए कई पहल आजाद भारत में शुरू की गई। कानून एवं नियम बनाए गए। कानूनी अधिकार के साथ उन्हें सशक्त बनाने के लिए संसद में कई नियम बनाए गए। अनैतिक व्यापार (रोकथाम) अधिनियम 1956, दहेज रोक अधिनियम 1961, वर्ष 1976 का बराबर पारिश्रमिक अधिनियम, मेडिकल टर्मिनेशन ऑफ प्रेगननसी अधिनियम 1987, बाल विवाह रोकथाम अधिनियम 2006, लिंग परीक्षण तकनीक (नियंत्रण एवं गलत इस्तेमाल) रोकथाम अधिनियम 1994, कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न अधिनियम 2013, तीन तलाख खत्म बिल जैसे अनेक नियम बनाकर महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने का प्रयास किया गया। उसके अनुरूप हर क्षेत्र में खासकर राजनीति में उनकी सहभागिता बढ़ाने के उद्देश्य से वर्ष 2023 में नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित किया गया। नारी को दीन-हीन समझने के बदले ताकतवार एवं सक्षम महिला के रूप में स्वीकार किया गया। इसके लिए व्यवस्थागत सुधार, नई कानूनी व्यवस्था,स्त्री केंद्रित कई पहल, आरक्षण और उनकी सुरक्षा सरकार कर रही है। आजकल चुनाव घोषणापत्र में महिलाओं के लिए ढ़ेर सारी प्रोत्साहन देने का प्रस्ताव है। यह चुनाव में उनकी बढ़ती भूमिका एवं प्रतिभागिता के कारण है। सरकार ने नारी केंद्रित कई परियोजनाओं की शुरुआत की है। इससे जाहिर है कि महिला सशक्तिकरण में भले ही समय लगे, अनिवार्य बन गया है।

स्वतंत्रता के पचहत्तर वर्ष के बाद भारत में समग्र परिवर्तन देखा जा सकता है। इन सकारात्मक उपलब्धियों के साथ ही देश भर में महिलाओं के विरुद्ध आपराधिक घटनाओं में वृद्धि हो रही है। जब नारी असुरक्षित है, हम विकास का दावा नहीं कर सकते। समाचार पत्रों और चैनल की सुरखियों में आ रही रिपोर्ट तथा सरकार एवं विविध एजेंसियों द्वारा ज़ारी रिपोट के अनुसार महिलाओं के विरुद्ध आपराधिक घटनाओं में हर साल वृद्धि हो रही है। यह चिंताजनक है। प्रत्याशित सुधार के बदले स्थिति और बिगड़ती जा रही है। सरकार की तरफ से महिलाओं के जीवन को सुरक्षित बनाने का हर प्रयास के बावजूद उनके प्रति घिनौनी हरकत बढ़ती जा रही है। हर जगह उन्हें खतरे का सामना करना पड़ रहा है। हत्या, बलात्कार, छेड़छाड़ और अपहरण की रिपोर्ट यथेष्ट उपलब्ध है। महिला खुद को सुरक्षित महसूस नहीं करती। वर्तमान समाज में सुरक्षित समझे चारदीवारी यानि परिवार में भी उन्हें बहुत कुछ भोगना पड़ता है। पारिवारिक लड़ाई का भोज उनपर भारी पड़ रही है। जितनी उम्मीद की जाती है उससे भिन्न सुरक्षित मानेजाने वाले कई परिसरों में नारी छेड़-छाड़ और यौन उत्पीड़न का शिकार बन जाती है। यह नारी सशक्तिकरण की ओर बढ़ते समाज

की खामियाँ हैं। निर्भया काँट के बाद भी रोज ऐसी असुरक्षित स्त्री का तस्वीर हमारे सामने आती है। स्त्री पर होनेवाली ऐसी वारदात पर लगाम लगाने में हम विफल होते जा रहे हैं। समाज में ऐसी धारणा आज भी विद्यमान है कि स्त्री पुरुष के बराबर नहीं है। वे महिलाओं को बराबरी देने, सार्वजनिक क्षेत्र में उनकी भागीदारी रोकने तथा उन्हें सहज बनाने की दिशा में अड़चनें पैदा करते हैं। पितृसत्तामक समाज को बरकरार रखने का प्रयास भी लगातर हो रहे है। लेकिन जितना किया जाए नारी इन सभी बंधनों को तोड़कर वे आगे बढ़ रही है। नारी अपनी उपस्थिति हर क्षेत्र में दर्ज कर रही है।

वर्तमान भारत में महिला की सबसे बड़ी भूमिका है। नेतृत्व शक्ति के साथ उनकी भूमिका हर क्षेत्र में पर्याप्त बदलाव ला रही है। स्पष्ट है, घर के साथ राष्ट्र के विकास में वह अपनी भूमिका बखूबी निभा रही है। महिलाओं में निहित जन्मजात नेतृत्व गुण समाज की पूंजी बन गई है। सरकार की विविध रिपोर्ट के अनुसार सभी क्षेत्रों में उनके नेतृत्व में बढ़ोत्तरी देखा जा सकता है। हाल ही में सम्पन्न चुनाव में मतदान के लिए महिलाओं ने बड़ी तादाद में निकल गई। उनकी तरक्की शिक्षा के क्षेत्र में, आर्थिक क्षेत्र में, उद्यमिता के क्षेत्र में और खेलकूद में देखा जा सकता है। सरकार ने इनके लिए अनेक योजनाओं जैसे बेटी पढ़ाओ- बेटी बचाओ, सुकन्या समृद्धि योजना, स्टैन्डअप इंडिया, पी एम मातृवंदना योजना प्रारंभ की और महिलाओं के लिए सैनिक स्कूल भी खोले गए। केवल महिला कार्यरत पुलिस स्टेशन, चुनाव केंद्र, बैक की शाखा रखे गए और यहाँ तक रेलगाड़ी के आगे-पीछे और स्टेशन में हरी झंडी दिखानेवाली महिलाओं की सख्या बढ़ती जा रही है। आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जो उनकी पहुँच से परे हो। घर से लेकर समाज के तमाम क्षेत्र में उनकी पहुँच उनकी शक्ति का मिसाल है। आज महिलाओं को सामाजिक न्याय के साथ आर्थिक आत्मनिर्भरता का अवसर है। वित्तीय समावेशन के माध्यम से प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर आत्मनिर्भर की दिशा में अग्रसर महिलाएँ वर्तमान यथार्थ है। प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण के अंतर्गत उनके खातों में विविध लाभ योजनाओं का पैसा जमा हो रही है जिससे महिलाओं में अधिक सुरक्षा एवं सम्मान का बोध होते है। आर्थिक रूप से सक्षम का अर्थ है स्वस्थ, सुरक्षित और प्रगतिशील समाज का हिस्सा बनना ही है। हाल ही में प्रस्तुत अंतरिम केन्द्रीय बजट में केंद्र सरकार ने नारी शक्ति की महत्ता एवं अर्थव्यवस्था में उनके व्यापक योगदान के बारे में बताया है। केरल के 'कुदुम्बश्री' महिला शक्तिकरण का उत्तम उदाहरण है। स्वयं सहायता समाज (एस एच जी) के माध्यम से महिलायें न केवल खुद को सशक्त बना रही है बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूत बना रही है। भारत में मौजूद तकरीबन एक करोड़ स्वयं सहायता समाज इसका उत्तम दृष्टांत है।

संसद के संयुक्त सदन को संबोधित करते हुए माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने कहा है कि 'भारतीय संस्कृति में महिलाओं को सदैव ही सम्मानपूर्ण स्थान दिया गया है और महिलाएं समाज के सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित रही हैं। आज भी हम लोग देवी दुर्गा, लक्ष्मी, काली और सरस्वती की पूजा करते हैं। यही नहीं हम गाँव में प्रवेश करने से पहले ग्राम देवी को भी नमन करते हैं। यह नारी शक्ति के प्रति अगाध सम्मान का प्रतीक है। नारी संतान को जन्म ही नहीं देती, उसका पालन पोषण भी करती है। जो महिला शक्ति का पालन-पोषण करती है, वह पूरे समाज, राष्ट्र व विश्व का पालन पोषण कर सकती है।'

निसन्देह कह सकते हैं महिलाएं समाज में सामाजिक,राजनीतिक और आर्थिक बदलाव की अग्रदूत बनी है। हमारा लक्ष्य यह है कि महिलाओं को आगे बढ़ाने का अवसर दें, उन्हें स्वतंत्र और आत्मनिर्भर होने की मदद करें, सुरक्षित एवं सहज महसूस होने के लिए आवश्यक कदम उठाएं। वास्तव में उन्हें फलने-फूलने का अवसर दें ताकि सशक्त नारी-सशक्त भारत का संकल्प साकार हो जाएगा। भारत के प्रधानमंत्री ने ठीक ही कहा कि नारी शक्ति के सशक्तिकरण की इस यात्रा को तेज गति से आगे बढ़ाना हम सभी का दायित्व है। आज़ादी के सौ वर्ष की ओर बढ़ते भारत में नारी शक्ति का पूर्ण विकास होगा।

कश्मीर यात्रा - बर्फ से ढका खूबसूरत गुलमर्ग

सी.जे. बिजू
उप प्रबन्धक - मानव संसाधन

गुलमर्ग श्रीनगर से 50 किमी पूर्व में पाकिस्तान अधिकृत सीमा (POK) क्षेत्र के पास है जो बारामूला जिला में स्थित है। यह स्थल समुद्र तल से लगभग 2650 से 4500 मीटर की ऊंचाई पर है। गुलमर्ग शब्द का अर्थ है फूलों से भरा बगीचा। यहाँ दुनिया का सबसे ऊंचा गोल्फ कोर्स और देवदार पेड़ों का भी जंगल भी है। गुलमर्ग के पर्यटन के लिए सबसे अच्छा समय मार्च से अक्टूबर तक है। एशिया की सबसे ऊंची पर्यटक केबल कार यहीं है। इसमें चढ़ कर हम बर्फीले पहाड़ों से, बर्फबारी के बीच, देवदार पेड़ों के ऊपर से 4200 मीटर ऊपर पहुँच सकते हैं। गुलमर्ग का सबसे बड़ा आकर्षण केंद्र भी यही है। सर्दियों में यहां बनने वाला इग्लू रेस्टोरेंट बहुत मशहूर है। सैनिकों के लिए बनाए गए स्की स्कूल यहाँ स्थित है।

गुलमर्ग देखने के लिए हम सुबह 8 बजे निकले। ट्रैफिक ब्लॉक से बचने के लक्ष्य के साथ कैबिल कार की भीड़ आने से पहले उधर पहुंचना हमारा लक्ष्य रहा। पुराने श्रीनगर से हमारी यात्रा आगे चली। शहर छुड़ते ही खूबसूरत नज़ारे मन को भा लिया। जैसे ही हम गुलमर्ग के पास पहुँचे, सड़क के दोनों ओर यहाँ-वहाँ बर्फ के टुकड़े थे। हम केरल के लोगों के लिए ये दृश्य बहुत ही आकर्षक रहा। जब गुलमर्ग की चढ़ाई शुरू करते हैं, हरे-भरे घास के मैदान, देवदार के जंगल, गहरी घाटियाँ और सुंदर सड़कें हमें देखने को मिला।

गुलमर्ग से लगभग 4 किमी पहले एक छोटे से चौराहे पर कार रुकी। यहीं से पर्यटक को बर्फ में चलने के लिए गम बूट और लंबे स्वेटर किराए पर लेते हैं। प्रति सेट के लिए रुपए 400 हैं जिसमें ड्राइवर का कमीशन भी शामिल है। इनके बिना हम इस शीत ऋतु में चल नहीं सकते। फिर से हमारी चढ़ाई शुरू. आगे एक लाइन में चल रहे गाड़ियों का सुंदर नज़ारा। अचानक हम एक कोने में मुड़े और बर्फ से ढके एक विशाल क्षेत्र में पहुँच गए। अचानक दिखते इस तरह के दृश्य का वर्णन शब्दों में नहीं कर सकता।

कार पार्क करने के बाद, हम ड्राइवर इमरान के निर्देशानुसार एक किमी दूरी पर केबल कार के बेस स्टेशन की ओर चलें। पहली बार बर्फ में निकला तो मुझे ठंड और कंपकंपी महसूस हुई। सड़क से बर्फ हटाता ट्रैक्टर। इस समय हमारे पीछे घुड़सवार के और विभिन्न प्रकार के बर्फ सवार इकट्ठे होंगे। डेढ़ किलोमीटर के सफर के शुरू में 2500 रुपए बोलेंगे और 400 तक का सौदा। जो भी हो, दोनों तरफ बर्फ से ढकी छोटी सी सड़क पर चलना आनंददायक है। आगे बढ़ते ही मैंने मलयालम में पूछा 'साधनम कय्यिल उण्डो' (क्या बोतल आपके पास है)। कुछ लोगों ने पीछे मुड़कर देखा। दोबारा पूछा। दो या तीन लोगों ने जवाब दिया, 'बोतल हाथ में है',। तभी मुझे एहसास हुआ कि इस यात्रा में भी कई मलयाली हैं। हां, आप कश्मीर में ही नहीं जहां भी जाएं वहां मलयाली लोग होंगे। छोटे बच्चों से लेकर 80-85 साल के बुजुर्ग तक। यहाँ के होम स्टे और वहाँ की रास्ते/सड़कें बर्फ से ढकी रहती हैं। जहां भी आप देखें,वह सूर्य की रोशनी में एक काले और सफेद चित्र जैसा दिखता है। यहाँ चश्मा एक आवश्यक वस्तु बन गयी है।

गुलमर्ग में अक्टूबर माह से बर्फबारी शुरू होती है जो फरवरी माह तक जारी रहेगी। हर स्थान में 4-5 मीटर की ऊंचाई पर बर्फ से ढका होगा। वैसे भी, हम अच्छे समय पर पहुंचे। अब हम केबल कार के प्रवेश द्वार पर खड़े हैं। भले ही हम पहले ही पहुँचा, तो भी अच्छी भीड़। पूरी तरह से लकड़ी से निर्मित एक सुंदर अंतरराष्ट्रीय मानक स्टेशन। टिकटें पहले ही बिक चुकी हैं। दो सप्ताह पहले ही ऑनलाइन बुकिंग पूरा हो चुका था। बाहर ऐसे एजेंट हैं जो आपको भारी रकम में टिकट दे सकते हैं। हमने अपने दोस्त और ट्रैवल एजेंट 'सिलसिला' के माध्यम से एक महीने पहले ही ऑनलाइन बुकिंग कर ली थी। केबल कार दो चरणों में चलेगी। पहले चरण में 3000 मीटर की ऊंचाई पर 2.5 किमी की दूरी तक पहुंचने के लिए 740 रुपये और वहां से दोबारा 4200 मीटर की ऊंचाई तक पहुंचने का दर 950 रुपये है। बहरहाल, डेढ़ घंटे तक लाइन में लगने के बाद केबल कार में चढ़ गए।

कभी न भूलने वाला अनुभव। नीचे देवदार के जंगल, इधर-उधर चरवाहों की बर्फ से ढकी झोपड़ियाँ हैं। यह 2.5 किमी की यात्रा है। नीचे, कई लोग घोड़ों और यात्रियों के साथ बर्फ की गाड़ियाँ खींच रहे थे। अद्भुत दृश्य। हमारी यात्रा के समय ठंड 3 डिग्री है। लोग दो दिन पहले तेज़ हवा और बारिश में कार बंद हो जाने की कहानी बताए। वैसे भी आज मौसम अच्छा है। अंत में हम पहाड़ों के पहले चरण में पहुँच गए। हर जगह बर्फ ही बर्फ। मनोरंजन के लिए कई सुविधाएँ। स्नो बाइक, स्कीइंग, घुड़सवारी, पेटी आदि । हमने वहां लगभग 1 घंटा बिताया।

मौसम थोड़ा बदल गया है। कश्मीर का मौसम और मुंबई का फैशन कब बदल जाता है किसी को पता नहीं। बूँदा-बाँदी शुरू हो गयी। जल्द ही हम अगले चरण की कतार में शामिल हो गये। अच्छी भीड़। जैसे ही हमने 4200 मीटर तक का सफर शुरू किया, हल्की सुखद बारिश हुई। थोड़ी देर बाद बर्फबारी शुरू हो गई। यह एक अच्छा सुखद अनुभव था। बर्फबारी का समय ख़त्म हो चुका था। लगता है हमारे लिए बना है। हम शीर्ष स्टेशन पर पहुँचे। ऑक्सीजन कम है। चारों तरफ बर्फ गिर रही है। बच्चों ने इसका जम कर आनंद उठा लिया। हम थोड़ा ऊपर चले। गाइड को यह कहते हुए मैं ने सुना कि यदि आप वहां से देखें, तो आप भारत-पाक सीमा देख सकते हैं।

वहां डेढ़ घंटा बिताया। अभी ढाई बज गया। रोटी खाया और पानी पिया। पता नहीं बारिश होगी या नहीं, जल्दी से वापस जाने के लिए कतार में लग गया। ट्रैफिक भी बहुत है। बारिश और हवा चलने लगी। वापस पहले चरण पर लौट आए। वहां कुछ समय बिताने के बाद बेस स्टेशन तक पहुंचने के लिए कतार करीब एक किमी लंबी थी। लगभग 5 बजे हम उस अद्भुत दुनिया से नीचे आए। ड्राइवर इंतज़ार कर रहे थे, पूछा सफर कैसी रही। आप लोग भाग्यशाली है, लौटते समय ड्राइवर ने एक देवी मंदिर और एक ईसाई चर्च भी दिखा दिया। इस यात्रा विवरण का उद्देश्य ही जो वहाँ जाना चाहते हैं उसकी तैयारी करने के लिए हैं। ही नहीं, कोई भी कम कीमत में कश्मीर की खूबसूरती का आनंद भी ले सकता है। हर पर्यटक का सपना है कि ज़िंदगी में एक बार धरती का स्वर्ग और भारत के सबसे खूबसूरत राज्य कश्मीर की यात्रा का मज़ा लें।

हिंदी है हमारी राजभाषा,
सभी कार्यस्थलों में उपयोग करें यही,
अपने प्रधान मंत्री जी की आशा है यही ।

भाषा है बहुत सरल और सुंदर,
देश की शान है इसके बल पर,
रखना है हमें हिंदी का मान,
तो ही आगे बढ़ेगा अपना हिंदुस्तान'

सीखने पढ़ने में बहुत है आसान,
बच्चे-बुढ़े सभी करो हिंदी का सम्मान,
हिंदी है अपने भारत देश की पहचान,
इसलिए हिंदी भाषा का करो ज्ञान ।

हिंदी भाषा से होती है अपने देश की प्रगति,
देश आगे बढ़ने में मिलती है गति,
भाषा संपर्क के लिए भी सर्वोत्तम,
उपयोग में लाने से कार्य होगा उत्तम '

सभी राज्यों की अलग बोल भाषा,
भारत की ह्रदय है हिंदी भाषा,
हिंदी को माना हमने अपनी राजभाषा,
विश्व में बोली जाए यही है हमारी आशा।

हिंदी में हम करें संभाषण,
होगा एचओसी का नाम रोशन,
हिंदी कामकाज में एचओसी हमारी
अधिकारी, कर्मचारियों को है बड़ी प्यारी
हिंदी में सब काम करेंगे, हिंदी का ही नाम करेंगे।

संजय प्रकाश गायकर
अधिकारी (प्रशासन)

सम्मेलन का लॉगो

पी. मिधुन बाबू
सहायक प्रबन्धक
(सिस्टम्स/सामग्री)

हिंदी दिवस एवं अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 2024 के लिए राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित चिह्न (Logo) प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए पी. मिधुन बाबू द्वारा तैयार किया गया लॉगो।

चयनित प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय / राष्ट्रीय दिवसों की सूची

जनवरी		
10th	विश्व हिंदी दिवस	WORLD HINDI DAY
10th -16th	सड़क सुरक्षा सप्ताह	ROAD SAFETY WEEK
12th	राष्ट्रीय युवा दिवस	NATIONAL YOUTH DAY
15th	सेना दिवस	ARMY DAY
26th	गणतंत्र दिवस	REPUBLIC DAY
30th	शहीद दिवस	MARTYRS DAY
फरवरी		
21th	अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस	INTERNATIONAL MOTHER LANGUAGE DAY
मार्च		
4th - 10th	राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह	NATIONAL SAFETY WEEK
8th	अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस	INTERNATIONAL WOMEN'S DAY
22nd	विश्व जल दिवस	WORLD DAY FOR WATER
अप्रैल		
14th	डॉ. अंबेडकर जयंती	DR. AMBEDKAR JAYANTHI
14th - 20th	अग्निशमन सेवा सप्ताह	FIRE SERVICE WEEK
22nd	विश्व पृथ्वी दिवस	WORLD EARTH DAY
23rd	विश्व पुस्तक दिवस	WORLD BOOK DAY
मई		
1st	अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस / मई दिवस	INTERNATIONAL LABOUR DAY / MAY DAY
5th	राष्ट्रीय श्रम दिवस	NATIONAL LABOUR DAY
31st	तंबाकू निषेध दिवस	NO TOBACCO DAY

जून		
5th	विश्व पर्यावरण दिवस	WORLD ENVIRONMENT DAY
21st	विश्व योग दिवस	WORLD YOGA DAY
जुलाई		
11th	विश्व जनसंख्या दिवस	WORLD POPULATION DAY
अगस्त		
15th	स्वतंत्रता दिवस	INDEPENDENCE DAY
सितंबर		
5th	शिक्षक दिवस	TEACHER'S DAY
14th	हिंदी दिवस	HINDI DIVAS
अक्टूबर		
2nd	गांधी जयंती	GANDHI JAYANTHI
8th	वायुसेना दिवस	AIR FORCE DAY
16th	विश्व खाद्य दिवस	WORLD FOOD DAY
नवंबर		
20th	बाल अधिकार दिवस	CHILD RIGHTS DAY
26th	संविधान दिवस	CONSTITUTION DAY
दिसंबर		
4th	नौसेना दिवस	NAVAL DAY
7th	सेना झंडा दिवस	ARMED FORCES FLAG DAY
10th	मानवाधिकार दिवस	HUMAN RIGHTS DAY
14th	राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस	NATIONAL ENERGY CONSERVATION DAY

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड
HINDUSTAN ORGANIC CHEMICALS LIMITED
(भारत सरकार का उद्यम A GOVERNMENT OF INDIA ENTERPRISE)
स्वच्छता ही सेवा 2024
SWACHHATA HI SEVA 2024
17th September - 2nd October 2024
स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता Swabhav Swachhata, Sanskaar Swachhata
हार्दिक स्वागत, Hearty Welcome,
श्री एच काम सुआंथांग
माननीय : संयुक्त सचिव (डीसीपीसी) का
एच ओसी एल में स्वच्छता दिवस समारोह
2024 में स्वागत है।
Sri. H Kam Suanthang
Hon: Joint Secretary (DCPC) to the
Swachhata Diwas Celebrations 2024
at HOCL.

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड
HINDUSTAN ORGANIC CHEMICALS LIMITED
स्वच्छता ही सेवा 2024
SWACHHATA HI SEVA 2024
स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता Swabhav Swachhata, Sanskaar Swachhata
स्वच्छ भारत दिवस समारोह
2 अक्टूबर 2024
SWACHH BHARAT DIWAS CELEBRATIONS
2ND OCTOBER 2024
एचओसीएल टाउनशिप, इरुम्पनम
HOCL TOWNSHIP, IRUMPANAM

कंपनी में विश्व पर्यावरण दिवस के विविध झलक

हिन्दुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लिमिटेड

पंजीकृत/निगमित कार्यालय एवं फैक्टरी, अंबलमुगल - 682302, एरणाकुलम जिला, केरल, भारत

दूरभाष : 0484 - 2720911-13, 2720844, वेबः www.hoclindia.com, फेसबुकः fb.me/hoclindia, ट्विटरः twitter.com/organic_ltd